



दीपाशिखा



महात्मा गाँधी पी.जी. कॉलेज

गोरखपुर

नैक (यू.जी.सी.) द्वारा 'बी' ग्रेड प्रदत्त

Website: [www.mgpgc.ac.in](http://www.mgpgc.ac.in) | E-mail : [mgpg\\_gkp@rediffmail.com](mailto:mgpg_gkp@rediffmail.com)



**बड़े हुए (बाएं से दाएं):** डॉ. शक्ति सिंह, प्रो. आलोक कुमार श्रीवास्तव, प्रो. नमिता कुमार, प्रो. उमेश कुमार गुप्ता, प्रो. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), प्रो. शैलेंद्र कुमार श्रीवास्तव, प्रो. अवनीश, प्रो. अमरनाथ ठाकुर, डॉ. सक्क अतहर।

**खड़े हुए प्रथम पंक्ति में (बाएं से दाएं):** डॉ. संजय सिंह, डॉ. एकता श्रीवास्तव, डॉ. रूपम श्रीवास्तव, डॉ. शिखा श्रीवास्तव, आकांक्षा सिंह, डॉ. संगीता त्रिपाठी, डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव, डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव, डॉ. मंजुला श्रीवास्तव, डॉ. क्षमता श्रीवास्तव, डॉ. श्वेताम्बरा श्रीवास्तव, डॉ. अल्पना त्रिपाठी, डॉ. संगीता श्रीवास्तव, डॉ. अनीता कुमारी।

**खड़े हुए द्वितीय पंक्ति में (बाएं से दाएं):** श्री सतीश शर्मा, डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह, डॉ. शैलेश वर्मा, डॉ. आलोक रंजन, डॉ. शैलेंद्र कुमार, डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव, श्री विशाल गुप्ता, डॉ. जितेंद्र कुमार, श्री रणधीर कुमार।

**खड़े हुए तृतीय पंक्ति में (बाएं से दाएं):** डॉ. नितिन कुमार बख्शी, डॉ. अनिल कुमार मिश्रा, डॉ. रितेश श्रीवास्तव, डॉ. संजय यादव, डॉ. अरुण कुमार श्रीवास्तव, डॉ. फणीन्द्र त्रिपाठी, डॉ. संतोष त्रिपाठी, डॉ. अजय बहादुर सिंह, डॉ. आर. एन. शुक्ला।

**खड़े हुए तृतीय पंक्ति में (बाएं से दाएं), श्री प्रियतोष मिश्रा, डॉ. बृजेश गुप्ता, डॉ. गौतम सिन्हा, डॉ. सुभाष शर्मा, डॉ. शशांक श्रीवास्तव, डॉ. अमित राय, डॉ. अयुश यादव, डॉ. शरद कुमार गुप्ता, डॉ. मनोज कुमार श्रीवास्तव, श्री विकास सिंह, श्री रविन्द्र कुमार शुक्ला, डॉ. आर. एन. यादव।**

# दीपशिखा

वार्षिक पत्रिका-2023



## महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज, गोरखपुर

नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी द्वारा संचालित

नैक (यू.जी.सी.) द्वारा "बी" ग्रेड प्रदत्त

website:www.mgpgc.ac.in E-mail : mgpg\_gkp@rediffmail.com



संरक्षक  
डॉ. अनिल कुमार सिंह  
प्राचार्य



प्रधान सम्पादक  
डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह  
एसो.प्रो., रसायन विज्ञान विभाग

सम्पादक मण्डल

डा. आलोक रंजन : वनस्पति विज्ञान विभाग  
डा. शक्ति सिंह : गृह विज्ञान विभाग  
डा. सदफ अतहर : वाणिज्य विभाग

॥ मुद्रक ॥

एक्सॅल प्रिंट सोल्यूशन

कृष्णा टाकीज कम्पाउण्ड, बकशीपुर चौराहा, गोरखपुर  
8009028999

01

## अनुक्रमणिका

क्रम सं.	लेखक/लेखिका	पृष्ठ सं.
01 कुल गीत		4
02 सरस्वती वन्दना		5
03 संदेश	माननीया राज्यपाल, उ.प्र., श्रीमती आनंदीबेन पटेल	6
04 संदेश	मा. मुख्यमंत्री उ.प्र., श्री योगी आदित्यनाथ	7
05 संदेश	अध्यक्ष, प्रबन्ध समिति, श्री गंगा दयाल श्रीवास्तव	8
06 संदेश	प्रबन्धक/सचिव, श्री मंकेश्वर नाथ पाण्डेय	9
07 From Principal's Desk	Principal, Prof. Anil Kumar Singh	10
08 सम्पादकीय	डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह	11
09 Internal Quality Assurance Cell Director's Message	Prof. Namita Kumar	12
10 महाविद्यालय एक नजर में...		13
11. गणित विभाग की एक झलक	प्रो. उमेश कुमार गुप्त, प्रभारी, गणित विभाग	15
12. सत्र 2022-2023 के वनस्पति विज्ञान विभाग की आख्या	प्रो. अवनीश	18
13. इनडोर पौधे	प्रो. अवनीश	19
14. मोटिवेटेड कोर्ट्स	अभिषेक कुमार यादव, बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर	20
15. विज्ञान प्रदर्शनी एक बहुआयामी कदम	प्रो. उमेश कुमार गुप्त, गणित विभाग	21
16. एक झलक राष्ट्र के लिए	सुनील कुशावाहा, बी.एस.सी. प्रथम वर्ष	22
17. राष्ट्रीय सेवा योजना का संक्षिप्त इतिहास	डॉ. रवीन्द्र नाथ शुक्ल, संयोजक, एन.एस.एस.	23
18. युवा संकल्प	हर्ष प्रताप सिंह, बी.एस.सी., प्रथम वर्ष	24
19. The Role of discipline in education and its impact on the process of learning	Dr. Alok Ranjan, Assist. Prof., Botany	25
20. सोशल मीडिया और हमारा मानसिक स्वास्थ्य	डॉ. सुष्मिता उपाध्याय, प्रभारी मनोविज्ञान विभाग	27
21. मेरी परछाई	आकांक्षा सिंह, सहायक आचार्य, भौतिकी विभाग	28
22. Key to Success	Dr. Shikha Srivastava, Assist. Prof., Electronics	28
23. विज्ञान प्रदर्शनी		29
24. अनुशासन समिति एवं आई.क्यू.ए.सी. समिति		30
26. पूर्व प्रबन्धक स्व. प्रेम नारायण श्रीवास्तव जी की प्रतिमा का अनावरण		31
27. शिक्षणेत्तर परिवार, सम्पादक मण्डल, कार्यालय परिवार, एन.एस.एस.		32
28. ललित कला महोत्सव के अन्तर्गत पुरातन छात्र सम्मेलन		33
29. शैक्षणिक भ्रमण		34
30. महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ		35
31. सकारात्मक अनाज	डॉ. शक्ति सिंह, प्रभारी गृह विज्ञान विभाग	37
32. The Need to Reclaim Our Traditional Foods	Dr. Priyanka Srivastav, Assist. Prof., Home Science	40
33. Success...if we have decided	Mr. Vishal Gupta, Assist. Prof., Botany	43
34. The influence of a good teacher can never be erased	Dr. Jitendra Kumar Assist. Prof., Zoology	44
35. आ जमीं पर यूँ गिरा	श्रेया सिंह, एम.एस.सी., चतुर्थ सेम.	45

क्रम सं.	लेखक/लेखिका	पृष्ठ सं.
36. रात्रि	श्रेया सिंह, एम.एससी., चतुर्थ सेम.	45
37. संस्कार	शिक्षा सिंह, बी.एससी., तृतीय सेम.	45
38. कालेज के वो पाँच साल...	दिव्यता पाण्डेय, एम.एससी., चतुर्थ सेम., बॉटनी	46
39. मुहब्बत की शमा जलाएँगे	शाम्भवी पाण्डेय, एम.एससी. बॉटनी, चतुर्थ सेम.	47
40. मुश्किलों से ना डर...	प्रिया मिश्रा बी.एससी., द्वितीय सेम.	47
41. The Incredible world of Plants: A Botany Student's Perspective	Shree Nidhi Singh M.Sc., Botany 2nd sem.	48
42. गुरू की महिमा	अंजली मद्देशिया, बी.एससी., द्वितीय सेम.	48
43. भारत देश महान, सत्य की बात	उन्नति रावत बी.एससी., द्वितीय सेमे.	49
44. If you want to..	Roli Tiwari, B.Sc.II sem.	49
45. नारी शक्ति	नम्रता वर्मा, बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर	50
46. आंसू	अनुप्रिया तिवारी, एम.एससी., बॉटनी	50
47. कड़वा सच...	प्रतीक्षा शर्मा, बी.काम., तृतीय वर्ष	50
48. जिन्दगी तेरी है, तू लड़ कर जीत भी जायेगा...	सतेन्द्र सोनकर, बी. एस.सी., प्रथम वर्ष	51
49. परीक्षा	लक्ष्मी चौधरी, बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर	51
50. बेरोजगार युवा	मधुर श्रीवास्तव, बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर	52
51. सुकून-ए-जिन्दगी	विजय लक्ष्मी प्रजापति, बी.काम., प्रथम वर्ष	52
52. जीवन की गाथा	अभिषेक कुमार दुबे, बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर	53
53. Botany's Student	Savita Mauraya, M.Sc. (Botany), 2nd Sem.	53
54. Phone is a disease for Today's youth	-----	54
55. Thought	Ariba Sageer, B.Com. III	54
56. सपने...	सेजल त्रिपाठी, बी.काम., तृतीय वर्ष	54
57. Poem	Sakshi Rai, B.Com III	55
58. माँ...	शिवांगी सिंह, बी.काम., तृतीय वर्ष	55
59. वजूद ( अस्तित्व )	रफत बानो, बी.एससी., तृतीय सेम.	55
60. ना जाने क्या खोज रहा हूँ, चलो वादा करते हैं, & आखिर क्या बनना चाहता हूँ मैं	आयुष श्रीवास्तव, बी.काम., तृतीय वर्ष	56
61. ई- गवर्नेंस क्या है ?	प्रिन्स पाण्डेय, बी.काम., तृतीय वर्ष	57
62. युवा पीढ़ी से आह्वान	श्रेया त्रिपाठी, बी.एससी., तृतीय सेम.	59
63. न्यूज पेपर की नजर में महाविद्यालय		60
64. महाविद्यालय परिवार		62
65. महाविद्यालय प्रबन्ध समिति		64



# कुल गीत

तपस्थली गोरक्षनाथ की- ( 2 ), सरस्वती का पावन धाम  
महात्मा गाँधी पीजी कॉलेज विद्या का है संस्थान।  
तपस्थली गोरक्षनाथ की -2

राम गरीब लाल की इच्छा हर नारायण का संकल्प  
तमसो माँ ज्योतिर्गमय का यह विद्यालय बना प्रकल्प।  
गाँधी जी की जन्म शती से यात्रा शुरू हुई अभिराम  
महात्मा गाँधी पीजी कॉलेज-( 1 )

सत्य अहिंसा और प्रेम का मिलता है संदेश यहाँ  
ज्ञान और विज्ञान समन्वित शोध परख परिवेश यहाँ  
सब धर्मों का करे सम्मान अंतर मन निश्छल निष्काम।  
महात्मा गाँधी पीजी कॉलेज-( 1 )

यह फिराक की जन्म भूमि है बिस्मिल का बलिदान यहाँ।  
प्रेमचंद की कर्म भूमि है गौतम की निर्वाण यहाँ।  
अमर शहीदों के गौरव से सज्जित स्वतंत्रता संग्राम।  
महात्मा गाँधी पीजी कॉलेज-( 1 )

देश प्रेम के वाहक हमें मातृभूमि का मान बढ़े।  
फिर से विश्वगुरु कहलाता यूँ भारत की शान बढ़ें।  
तन-मन धन और वचन कर्म से आए सदा देश के काम।



# सरस्वती वन्दना



हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,  
अज्ञानता से हमें तार दे माँ  
तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे,  
हम हैं अकेले हम हैं अधूरे,  
तेरी शरण में हमें प्यार दे माँ॥

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,  
मुनियों ने समझी गुनियों ने जानी,  
वेदों की भाषा पुराणों की बानी।  
हम भी तो समझें हम भी तो जानें,  
विद्या का हमको अधिकार दे माँ॥

हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,  
तू श्वेतवर्णी कमल पे विराजे,  
हाथों में वीणा मुकुट सर पे साजे।  
अज्ञानता के मिटा दे अंधेरे,  
उजालों का हमको संसार दे माँ॥  
हे शारदे माँ, हे शारदे माँ,

आनंदीबेन पटेल

राज्यपाल, उत्तर प्रदेश



सत्यमेव जयते

राज भवन

लखनऊ-226 027

## संदेश

मुझे यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई कि महात्मा गांधी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, गोरखपुर द्वारा वार्षिक पत्रिका "दीपशिखा" का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षा देश के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन में विशेष भूमिका का निर्वाह करती है। शिक्षित नागरिक समाज के सर्वांगीण विकास में अपना सहयोग प्रदान करता है। मुझे उम्मीद है कि कालेज की वार्षिक पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण पाठ्य सामग्री का समावेश किया जायेगा, जो विद्यार्थियों के लिये उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

आनंदीबेन  
( आनंदीबेन पटेल )



योगी आदित्यनाथ  
मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश



मुख्य मंत्री  
उत्तर प्रदेश

75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव

लोक भवन  
लखनऊ-226001

संख्या-G-109/सी.एम.-2/2023

## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि महात्मा गांधी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, गोरखपुर द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'दीपशिखा' का प्रकाशन किया जा रहा है। समाज और राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा का योगदान सर्वविदित है।

व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को संस्कारों से जोड़ना आवश्यक है। शिक्षण संस्थाओं की पत्रिकाएं विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सार्थक मंच उपलब्ध कराती हैं। इसके दृष्टिगत महाविद्यालय द्वारा वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय है। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में सृजनशीलता तथा सुरुचिपूर्ण रचनात्मकता विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

वार्षिक पत्रिका " दीपशिखा " के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

( योगी आदित्यनाथ )



## संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि विगत वर्षों की भांति हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका " दीपशिखा " का नवीन अंक ( सत्र 2022-23 ) प्रकाशित होने जा रहा है। किसी शैक्षणिक संस्थान द्वारा प्रकाशित पत्रिका उस संस्थान की एक नैसर्गिक तस्वीर होती है। इसमें महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं के मन में अंकुरित होने वाले ज्ञान का एक प्रतिबिम्ब समाहित होता है।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि हमारे महाविद्यालय की पत्रिका के इस अंक में विभिन्न समसामयिक विषय से संबन्धित लेख, रूचिकर, ज्ञानवर्धक एवं अन्य सारगर्भित जानकारियों का समावेश होगा।

" दीपशिखा " के नवीन अंक के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

*Dr. Srivastava*  
02/04/2023

( गंगा दयाल श्रीवास्तव )

अध्यक्ष, प्रबंध समिति  
महात्मा गांधी पी.जी. कालेज,  
गोरखपुर



# नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी, गोरखपुर

( स्थापना वर्ष-1909 ई0 )

संचालित संस्थाएँ

महात्मा गाँधी इण्टर कालेज, महात्मा गाँधी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, राम नरायन लाल कन्या इण्टर कालेज  
नेशनल छात्रावास, प्रकाश नरायण इन्स्टीट्यूट ऑफ कम्प्यूटर टेक्नालॉजी

मंकेश्वर नाथ पाण्डेय

सचिव, नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी, गोरखपुर  
प्रबन्धक, महात्मा गाँधी इण्टर कालेज, गोरखपुर  
प्रबन्धक, महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज, गोरखपुर

52, हरिओमनगर, फेज-II

सिविल लाइन्स, गोरखपुर ( 30प्र0 )

फोन: 0551-2337818 ( आवास )

E-mail-mankeshwar.pandey@yahoo.co.in



## संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका " दीपशिखा " का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी, गोरखपुर द्वारा 1969 ई0 में स्थापित यह महाविद्यालय उच्च शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है।

युवा मन सृजनात्मक क्षमता से भरा होता है और कल्पना लोक में उड़ान भरता रहता है। कालेज पत्रिका के माध्यम से इन युवा विद्यार्थियों की रचनात्मकता एवं सृजनात्मकता प्रस्फुटित होती है। छात्रों के अन्दर छिपा हुआ कवि, लेखक, दार्शनिक झाँकता हुआ दिखाई देने लगता है। यह पत्रिका कालेज में होने वाली विभिन्न गतिविधियों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ रचनात्मक कार्य और अभिव्यक्ति को अवसर प्रदान करने का एक सशक्त माध्यम बनेगी। मैं आशा करता हूँ कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के सत्र-2022-23 का यह अंक रचनात्मकता से भरा होगा एवं एक नई सोच के साथ ज्ञान की दिव्य आभा बनेगा ।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका " दीपशिखा " के सफल प्रकाशन के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य, मुख्य सम्पादक एवं सम्पादक को अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

( मंकेश्वर नाथ पाण्डेय )

प्रबन्धक/सचिव

महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज  
गोरखपुर



# From Principal's Desk



India's 21st century's first education policy, National Education Policy 2020 (NEP 2020) promises to implement path breaking reforms in the education sector. The college has wholeheartedly adopted the policy as it aims for a holistic development of students. The curriculum is designed to open the doors to the global platforms while fulfilling the academic requirements. It incorporates activities and events that meet value education, health education, games and sports, culture and heritage, visual and performing arts and personality development. In order to meet these challenges we have to provide a responsible, sensitive, dynamic and academic atmosphere in the campus. Our aim is to provide methods of learning that include inquiry, research, analytical thinking and an ethical approach so that it becomes a life time habit and nourishes a strong awareness of social and environmental responsibilities within our students. This has been made possible by collaborative efforts of college administration, committed teachers and disciplined students. Being the administrative and academic leader of the college, execution of annual academic calendar, co-curricular and extracurricular activities are supervised with help from different committees. I am trying my best to find a solution to overcome any problems of diverse nature in the college and propel a step to make India a global knowledge superpower. I express my sincere greetings to the faculty members and students involved with college magazine. I don't just hope, I believe this college magazine will fulfil its aim of being a mirror of activities in the college in academic year 2022-23. provide a place for budding writers and will be a source of entertainment and knowledge.

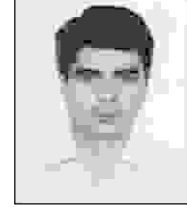
With Best Wishes

**Prof. Anil Kumar Singh**

Principal

## सम्पादकीय

महाविद्यालय से प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएं छात्र-छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति के कौशल को विकसित होने का अवसर प्रदान करती हैं। किसी महाविद्यालय की पत्रिका उसकी साहित्यिक पूंजी होती है। विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला एवं मानविकी के पाठ्यक्रम और विभिन्न पाठ्येत्तर गतिविधियों जैसे खेल-कूद, एन.एस.एस., सेमिनार या अन्य को पत्रिका में स्थान मिलने से छात्रों को इन गतिविधियों में शामिल होने की प्रेरणा मिलती है। इस तरह की विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने से उनके अन्दर संचार, सहयोग, समूह में कार्य करने की क्षमता के साथ-साथ व्यवहार कुशलता और जीवन कौशलों का विकास होता है।



**डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह**  
मुख्य सम्पादक

सत्र 2022-23 से महाविद्यालय की सभी कक्षाओं में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 लागू हो चुकी है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य हर छात्र की विशिष्ट क्षमताओं की पहचान कर उन्हें मान्यता और प्रोत्साहन देना है। छात्रों की विभिन्न क्षमताओं में से एक अतिप्रभावशाली क्षमता है अभिव्यक्ति का कौशल। अभिव्यक्ति की विभिन्न विधाओं में लेखन एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम है। लेखन चिंतन प्रक्रिया से होकर कभी कल्पना लोक में पल्लवित एवं प्रफुल्लित होती है तो कभी समाज के यथार्थ का आइना बन जाती है। छात्र-छात्राओं को लेखन की ओर आकर्षित करने की दिशा में कालेज पत्रिकाएं मील का पत्थर साबित होती हैं। पत्रिका के माध्यम से छात्र-छात्रों की प्रतिभा एवं लेखन कौशल को अभिभावकों व समाज तक पहुँचाया जा सकता है। जब कोई छात्र अपनी कल्पना को पत्रिका में अपने नाम के साथ देखता है तो उसे अपार खुशी एवं प्रेरणा मिलती है और समाज एक नये कवि, लेखक अथवा दार्शनिक से परिचित होता है।

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'दीपशिखा-2023' का यह अंक महाविद्यालय को समर्पित करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष की अनुभूति हो रही है। हमारे महाविद्यालय के छात्र-छात्रों ने शैक्षिक, सामाजिक एवं स्त्री विमर्श पर अपनी कल्पनाओं और वास्तविकताओं को कागज पर उकेरा है। सम्पादक मण्डल महाविद्यालय परिवार के सभी छात्र-छात्रों, शिक्षकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों तथा समाज के प्रत्येक नागरिक को धन्यवाद ज्ञापित करता है जिनके सहयोग एवं सुझाव के बिना पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन सम्भव नहीं हो पाता। इस अंक को पूर्ण करने में फोटोग्राफर शैलेश श्रीवास्तव तथा ऐक्सेल प्रिंटिंग प्रेस विशेष रूप से धन्यवाद के पात्र हैं।

अंत में 'दीपशिखा-2023' के संरक्षक एवं प्राचार्य प्रो. अनिल कुमार सिंह जी एवं महाविद्यालय के दूरदर्शी प्रबन्धक/सचिव श्री मंकेश्वर नाथ पाण्डेय जी को संपादक मण्डल की ओर से हार्दिक आभार और धन्यवाद। आपके कुशल नेतृत्व, निर्देशन व सहयोग से ही पत्रिका के इस अंक का प्रकाशन सम्भव हो पाया है।

धन्यवाद

# Internal Quality Assurance Cell

## Director's Message

Greetings!

The College established the Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 10.01.2014 as a post-accreditation quality sustenance measure as prescribed by the NAAC. Since then, the IQAC, being an integral part of the College, is working towards realizing the goals of quality enhancement by developing a system for conscious and consistent action in order to improve the overall academic and administrative performance of the College. Internal Quality Assurance System is a step towards excellence. It assures its stakeholders, the students, parents, teachers and society in general of its accountability towards quality management of the College's Academic and Administrative System. IQAC also ensures its concern about quality education being imparted through its feedback system. IQAC conducts students' feedback, alumni and parents' general feedback on different aspects of the campus. This is used for quality sustenance and improvement in teaching, learning, research experiences, infrastructure, discipline, etc. in the College. One of the major functions of IQAC is to inculcate among the entire teaching and non-teaching staff, the practice of documentation of each and every academic, semi-academic, co-curricular and administrative activities of the College for various higher education requirements. Thus, a continuous follow-up has to be made to keep the profiles and data updated. IQAC, as per the requirements of NAAC, also focuses on upkeep and additions of infrastructural resources of the college to ensure adequate facilities for a conducive and enabling environment for teaching, learning and research. IQAC facilitates the creation of a learner-centric environment conducive to quality education. We ensure the development of quality culture in the college for all round development of the students by also adopting and disseminating the best practices, like, celebrations of important days and events, birth anniversaries of great personalities, sensitising students towards their social, college and family responsibilities, improving their personality by lecture series on personality development, making them aware of a cleaner, greener and safer environment etc. Thus, IQAC strives hard for making excellence of the college, a continuous process.



With Best Wishes,  
**Prof. (Dr.) Namita Kumar**  
Director  
IQAC

## महाविद्यालय एक नजर में...



गोरखपुर जनपद एवं पूर्वांचल के छात्रों को प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सन् 1909 में नेशनल, एजुकेशनल सोसाइटी की स्थापना की गई। इस सोसाइटी ने 1909 में गोरखपुर हाईस्कूल की स्थापना की। गोरखपुर हाईस्कूल महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर महात्मा गाँधी इण्टर कालेज के रूप में स्थापित हुआ। अपने विकास के क्रम में 60 वर्ष के बाद सन् 1969 में महात्मा गाँधी के जन्मशती पर सोसाइटी ने महात्मा गाँधी इण्टर कॉलेज को विस्तारित करते हुए महात्मा गाँधी डिग्री कालेज की स्थापना की जिससे कि पूर्वांचल के छात्र-छात्रों को विज्ञान की उच्च शिक्षा की उपलब्धता करायी जा सके।

सन् 1992 में रसायन विज्ञान तथा जन्तु विज्ञान विषय में परास्नातक की शिक्षा शुरू करते हुए महात्मा गाँधी डिग्री कालेज महात्मा गाँधी पी.जी. कालेज बन गया। बाद में यह महाविद्यालय गणित, वनस्पति विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान में भी स्नातकोत्तर की शिक्षा देने लगा। अपने प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए यह महाविद्यालय स्नातक स्तर पर गणित, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान एवं जन्तु विज्ञान के साथ-साथ शारीरिक शिक्षा, मनोविज्ञान, औद्योगिक रसायन, इलेक्ट्रानिक्स तथा कम्प्यूटर साइंस में भी शिक्षा प्रदान करने लगा। विज्ञान विषय की गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा प्रदान करने में इस कॉलेज को विशेष स्थान प्राप्त है।

विज्ञान विषय की उच्च शिक्षा में उँचाइयों के बाद यह कॉलेज वर्तमान में वाणिज्य विषय ( B.Com. ) एवं गृह विज्ञान ( B.Sc- Home Science ) में भी विशेष ख्याति प्राप्त कर रहा है। वर्तमान में महाविद्यालय के सभी संकायों एवं विषयों में नेशनल एजुकेशन पालिसी ( NEP ) लागू है। पाठ्यक्रम के अतिरिक्त महाविद्यालय में विभिन्न रोजगारपरक कोर्स भी चल रहे हैं। कुशल एवं दूरदर्शी प्रबन्ध तंत्र, सुयोग्य एवं कर्मठशील शिक्षकों तथा अनुशासित छात्र-छात्राओं की मेहनत से यह महाविद्यालय पूर्वांचल में विशेष ख्याति प्राप्त है। यहां के पुरातन छात्र देश एवं विदेश में महाविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। वर्तमान में रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान एवं गणित विभाग शोध केन्द्र के रूप में भी स्थापित हैं जिसमें बहुत से शिक्षक दीनदयाल उपाध्याय विश्व विद्यालय गोरखपुर द्वारा शोध पर्यवेक्षक के रूप में अधिकृत किये गये हैं। कई छात्र-छात्राएं शोध के लिए पंजीकृत होकर अपना शोध कार्य कर रहे हैं।

**प्रबन्ध तंत्र :** महाविद्यालय का संचालन महाविद्यालय की पैतृक संस्था नेशनल एजुकेशनल सोसाइटी के अन्तर्गत गठित प्रबन्ध समिति के कुशल एवं सुयोग्य निर्देशन में किया जाता है। वर्तमान प्रबन्ध समिति के प्रबन्धक/सचिव श्री मंकेश्वर नाथ पाण्डेय जी एवं अध्यक्ष श्री गंगादयाल श्रीवास्तव जी हैं।

**शिक्षक:** यहां के शिक्षकों की उत्कृष्ट शिक्षण शैली एवं विषय का ज्ञान, समय पर पाठ्यक्रम पूरा करने की आदत, उच्चस्तरीय शोध एवं सहज-सरल व्यवहार महाविद्यालय को उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम देता है। गुणात्मकता की दृष्टि से महाविद्यालय का शैक्षिक स्तर उच्च श्रेणी का रहा है। वर्तमान में यहां 60 शिक्षक कार्यरत हैं जिनमें से 50 पी एच.डी. उपाधि से सम्मानित हैं। सभी शिक्षक पठन-पाठन के अलावा शोध कार्यों एवं पाठ्येत्तर गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करते हैं।

**प्रयोगशालाएं:** महाविद्यालय के सभी पाँच विज्ञान विभाग में द्विस्तरीय प्रयोगशालाएं विद्यमान हैं जिनमें स्नातक एवं परास्नातक स्तर पर प्रयोगिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर साइंस, गृह विज्ञान,

इलेक्ट्रानिक, औद्योगिक रसायन, मनोविज्ञान एवं वाणिज्य विभागों की प्रयोगशालाएं उत्कृष्ट स्तर से सुसज्जित हैं। शोध कार्य हेतु अलग से उत्कृष्ट प्रयोगशालाएं सभी विभागों में विद्यमान हैं जिनके माध्यम से महाविद्यालय के विभिन्न शिक्षक शोध छात्रों को निर्देशित करते हैं।

**कैंटीन:** महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के जलपान हेतु एक स्तरीय कैंटीन की स्थापना की गई है। कैंटीन विभिन्न प्रकार के भोज्य पदार्थ छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए उपलब्ध कराता है।

**शैक्षणिक भ्रमण:** विगत शैक्षणिक सत्र में महाविद्यालय के विभिन्न विभागों के स्नातक एवं परास्नातक के छात्र-छात्राएं शैक्षणिक भ्रमण हेतु विभिन्न स्थानों पर गये। वनस्पति विज्ञान विभाग के परास्नातक के सेमेस्टर II & IV के छात्र-छात्राओं ने जैव विविधता एवं टैक्सोनामी के अध्ययन हेतु नेपाल के रामापिथेकस वानस्पतिक उद्यान का भ्रमण किया एवं पौधों यथा शैवाल आदि का अध्ययन हेतु संग्रह किया।

स्नातक के छात्रों का एक शैक्षणिक भ्रमण मनाली, हिमाचल प्रदेश डॉ. महेश यादव के नेतृत्व में गया। B.Sc. औद्योगिक रसायन के छात्रों का एक औद्योगिक भ्रमण चौधरी फ्लोर मिल एवं पराग डेयरी, बस्ती के लिए श्री रवीन्द्र शुक्ला के नेतृत्व में गया था।

**पुस्तकालय:-** केन्द्रीय पुस्तकालय तथा विभिन्न विभागीय पुस्तकालयों में पुस्तकें, शोध एवं अन्य पत्रिकायें शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के ज्ञान वर्धन हेतु उपलब्ध हैं। बदलते पाठ्यक्रम के अनुसार नई पुस्तकें छात्र हित में प्रत्येक वर्ष क्रय की जाती हैं। पुस्तकालय में इन्टरनेट सुविधा तथा Inffibnet Center द्वारा ई-लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के सामान्य ज्ञान हेतु विभिन्न पत्रिकायें तथा दैनिक समाचार पत्र भी पुस्तकालय में उपलब्ध रहती हैं।

**राष्ट्रीय सेवा योजना:** महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की एक इकाई कार्यरत है जिसके कार्यक्रम अधिकारी डॉ. आनिल कुमार मिश्रा एवं संयोजक डा. आर.एन.शुक्ला हैं। NSS के द्वारा समाज में विभिन्न कुरीतियों के प्रति जागरूकता, साम्प्रदायिक सद्भावना हेतु रैलियाँ, योग का महत्व, सूचना का अधिकार, जल एवं सड़क तथा पर्यावरण सम्बन्धित कार्यों के प्रति जागरूकता फैलाते हुए छात्र/छात्राओं का व्यक्तित्व विकास किया जाता है।

**प्रशिक्षण एवं सेवा योजना इकाई:** महाविद्यालय के छात्र/छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ दक्षता विकसित करने, जिससे आगे चलकर अपने लिये अनेक रोजगार के अवसरों का सृजन कर सकें तथा देश के उत्थान में योगदान कर सकें, के ध्येय से महाविद्यालय में प्रशिक्षण तथा सेवायोजन इकाई का गठन किया गया है। इस इकाई का मुख्य कार्य रोजगार से सम्बन्धित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों, व्याख्यानों तथा सेवायोजन के अवसर प्रदान करना है।

**खेल-कूद:** महाविद्यालय प्रांगण में विभिन्न खेलों के लिये सुविधायें उपलब्ध हैं। मुख्य रूप से बैडमिण्टन, एथलेटिक्स, वालीबॉल, क्रिकेट तथा फुटबाल आदि खेलों की सुविधायें परिसर में उपलब्ध हैं। महाविद्यालय में प्रत्येक वर्ष वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है।

**अनुशासन:** किसी भी संस्था का विकास वहाँ के अनुशासन व्यवस्था पर निर्भर करता है। महाविद्यालय में अनुशासन बनाये रखने के लिये अनुशासन समिति का गठन किया गया है जिसमें डॉ. उमेश कुमार गुप्त मुख्य नियन्ता तथा महाविद्यालय के कई अन्य शिक्षक नियन्ता के रूप में कार्य करते हैं। अनुशासन समिति के सभी सदस्यों तथा महाविद्यालय के सभी छात्र-छात्राओं के सहयोग से महाविद्यालय का अनुशासन उच्च कोटि का है।



## गणित विभाग की एक झलक

कॉलेज स्थापना वर्ष 1969 से गणित विभाग महाविद्यालय के सबसे पुराने एवं सबसे प्रमुख विभागों में से एक है। विभाग द्वारा स्नातक, स्नातकोत्तर के साथ ही पीएचडी डिग्री के लिए डॉक्टरेट कार्यक्रम की शिक्षा कुशल एवं अनुभवी प्राध्यापकों द्वारा संचालित है। प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता, पोस्टर प्रजेंटेशन, सेमिनार, संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है जिसका उद्देश्य छात्रों और शिक्षकों का बौद्धिक विकास कर मूल्य और क्षमता के महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक परिणाम प्रदान करना है, जो बदले में, विषय के शिक्षण और शिक्षा के मानक को बढ़ाता है और उन्हें देश और विदेश में उत्कृष्टता के विभिन्न अन्य केंद्रों के साथ सहयोग करने में सक्षम होने के लिए तैयार करता है। विभाग सभी पाठ्यक्रमों में पूरे वर्ष कठोर शिक्षण और सीखने के अभ्यास पर जोर देता है। विभाग का एक समृद्ध इतिहास है और विद्वानों की एक प्रतिष्ठित श्रृंखला ने इसे सुशोभित किया है। शिक्षकों और छात्रों के बीच अच्छा संवाद है, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों ने विश्वविद्यालयी परीक्षाओं के साथ-साथ JAM, NET, SLET, GATE, TIFER, HRI, NBHM सिविल सेवा प्रतियोगी परीक्षाओं में भी स्थान हासिल किया है। वर्तमान में आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थान और विदेशों में भी अनुसंधान और शोध एवं शैक्षणिक गतिविधियों में अपनी सेवा दे रहे हैं। नई शिक्षा प्रणाली ( NEP2020 ) के तहत गणित विषय में प्रायोगिक कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है जिसमें छात्र-छात्राओं को कम्प्यूटर स्किल सिखाकर उन्हें MATLAB, R programming जैसे कम्प्यूटर की भाषा से ग्राफ बनाने, समीकरण को हल करने एवं गणितीय प्रमेयों को सिद्ध करने का कौशल विकसित किया जा रहा है। गणित विभाग द्वारा महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की स्मृति में प्रत्येक वर्ष रामानुजन गणित प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है जो वस्तुनिष्ठ पर आधारित एक परीक्षा है। इसमें विश्वविद्यालय एवं अन्य महाविद्यालय के भी छात्र-छात्राएँ सम्मिलित होते हैं।



प्रो. उमेश कुमार गुप्त  
प्रभारी, गणित विभाग

### Mathematical Society session 2022-23

<b>President :</b>	<b>Dr. Amit Kumar Ray</b>	
<b>Vice President :</b>	Habibur Rahman	M.Sc. Final
<b>Secretary :</b>	Aditya Pandey	M.Sc. Previous
<b>Members :</b>		
1. Harshita Sharma	B.Sc. 3 <sup>rd</sup> Year	
2. Hemant Patel	B.Sc. 3 <sup>rd</sup> Year	
3. Rukshar Bano	B.Sc. 2 <sup>nd</sup> Year	
4. Shivani Shukla	B.Sc. 2 <sup>nd</sup> Year	
5. Suraj Prajapati	B.Sc. 1 <sup>st</sup> Year	
6. Anjali Gupta	B.Sc. 1 <sup>st</sup> Year	
7. Yatinath Madhesiya	B.Sc. 2 <sup>nd</sup> Year	
8. Priya Tripathi	B.Sc. 1 <sup>st</sup> Year	
9. Nigam Chaurasiya	B.Sc. 1 <sup>st</sup> Year	

## गणित विभाग की उपलब्धियां:

1. दी. द. उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा प्रोफेसर उमेश कुमार गुप्त को शोध पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया, प्रो. गुप्त के निर्देशन में श्री वकील श्रीवास्तव ( शोध छात्र ) शोध का कार्य कर रहे हैं।
2. दी. द. उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा सत्र 2022-2023 में वार्षिक एवं सेमेस्टर परीक्षा हेतु प्रो. उमेश कुमार गुप्त को सचल दल समन्वयक नियुक्त किया गया।
3. इस वर्ष राघवेन्द्र प्रताप सिंह ने आईआईटी जैम ( Mathematics ) की परीक्षा में 119वीं रैंक हासिल कर कॉलेज का नाम रौशन किया।
4. डॉ. रविन्द्र नाथ शुक्ल राष्ट्रीय सेवा योजना में संयोजक के रूप में कार्य कर रहे हैं।
5. डॉ. आकाश पाण्डेय ने "क्रिप्टोग्राफी " विषय पर महाराणा प्रताप महाविद्यालय जंगल घूसण में व्याख्यान दिया।
6. डॉ. आर.एन. शुक्ल एवं डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव ने Osmania uUniwersity द्वारा आयोजित online (NEP2020) Workshop 13.22.2022 से 15/12/2022 में सहभागिता दी।
6. डॉ. आर. एन. शुक्ल ने वैदिक गणित की वर्तमान जीवन में उपयोगिता विषय पर व्याख्यान पं. सत्य नारायण द्विवेदी स्मारक पी.जी. कालेज सुल्तानपुर में दिया।
8. डॉ.आर.एन.शुक्ला ने दी. द. उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित Information & Communication Technology" में अपनी सहभागिता प्रस्तुत की।

### **Publishid Research Papers**

1. Constraint Programming have been identifying as promising Technique for efficiently solving discrete optimisation problenu JUSPS-A vol. 35 (2)-12-21 (2023) by Akash Pandey & Umesh Kumar Gupta
- 2- E- Bochner Curvature Tensor on Almost  $C(\lambda)$  manifolds, Facta Universitatis, Series Mathematics and Informatics by B.K. Gupta
- 3- On a Submanifold of a kaehler- Norden Manifolds, Journal of the tensor Society by BK Gupta

### **Published Books**

- 1- Text book of Algebra-Krishria Prakashan Media Pvt Ltd Meerut  
ISBN-978-93-94511-04-0  
By Prof. Umesh Kumar Gupta & Dr. Aksh Pandey
- 2- Text Book of Inkgral Calcules- Krishna Prakashan Media Pvt Ltd  
ISBN-978-9391152-07-09  
By Prof. Umesh Kumar Gupta & Dr. Akash Pandey
- 3- A Text Book of Differential equations- Vandana Prakashan, Gorakhpur,  
ISBN-978-93-91245-08  
By Dr. Amit Kumar Ray & Dr. R.N. Shukla
- 4- A Text Book of Mechanics- Vandana Prakashan Gorakhpur  
By Dr. AK Srivastava & Dr. R.N. Yadav.

## गणित विभाग की गतिविधियां:

1. दिनांक 22/12/2022 को प्रथम सत्र में रामानुजन मैथमेटिक्स कम्पटीशन का आयोजन डॉ रविन्द्र नाथ शुक्ल, डॉ. अमित कुमार राय, डॉ. अजय श्रीवास्तव के निर्देशन हुआ जिसमें विजेताओं को पुरस्कृत किया गया, प्रथम पुरस्कार संस्कार पांडेय, बी.एससी, थर्ड ईयर एवं द्वितीय पुरस्कार अनीस अंसारी को प्राप्त हुआ।

2. दिनांक 22/12/2022 को गणित दिवस मनाया गया। प्राचार्य प्रो. अनिल कुमार सिंह ने कहा कि गणित हर जगह विद्यमान है, डॉ. ए. पी. श्रीवास्तव ने कहा कि गणित विषय मनुष्य के सोचने समझने की समझ विकसित करता है।

विभागाध्यक्ष प्रो. उमेश कुमार गुप्त ने कहा कि गणित विषय हर जगह समावेशित है इसके बिना जीवन संभव नहीं है, विज्ञान का आधार गणित है। डॉ रविन्द्र नाथ शुक्ल, डॉ. अमित कुमार राय, डॉ. अजय श्रीवास्तव डॉ. आर.एन. यादव, डॉ. बृजेश कुमार गुप्ता एवं डॉ. आकाश पांडेय मौजूद रहे। संचालन डॉ. अमित कुमार राय, डॉ. आकाश पांडेय ने किया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमित राय ने किया। एम.एससी. और बी.एससी. के छात्र उपस्थित थे।

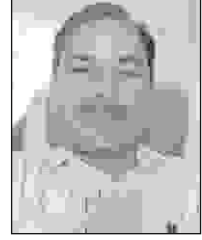
3. दिनांक 13/02/2023 को एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था " Use of Mathematical Analysis in Real Life " कार्यक्रम की अध्यक्षता कालेज के प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार सिंह ने किया। अपने सम्बोधन में कहा कि गणित वह भाषा है जिसमें परमेश्वर ने सम्पूर्ण जगत या ब्रम्हांड को लिख दिया है। अन्य विषयों की अपेक्षा गणित का हमारे दैनिक जीवन से गहरा संबंध है। गणित संस्कृति एवं सभ्यता का सृजनकर्ता एवं पोषक भी माना जाता है। गणित विभागाध्यक्ष प्रोफेसर उमेश कुमार गुप्त ने कहा कि गणित हर सभी के अंदर एक नयी परिकल्पना और सोच विकसित करता है। यह हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का दर्पण है। गणित व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का विकास करती है।

सेमिनार के संयोजक डॉ. अमित कुमार राय एवं डॉ. आकाश पांडेय रहे। इस अवसर पर डॉ. आर.एन. शुक्ल, डॉ. अजय श्रीवास्तव, डॉ. आर. एन. यादव तथा डॉ. बी.के. गुप्ता एवं छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

4. दिनांक 13/02/2023 को एक सेमिनार का आयोजन किया गया जिसका शीर्षक था " विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास में गणित की भूमिका " कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कालेज के प्राचार्य प्रोफेसर अनिल कुमार सिंह ने अपने सम्बोधन में कहा कि गणित से ही विज्ञान शुरू होता है और विज्ञान से प्रौद्योगिकी। अतः हम कह सकते हैं कि गणित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की जननी है। विभागाध्यक्ष प्रोफेसर उमेश कुमार गुप्त ने कहा कि गणित का उपयोग स्मार्टफोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, कोडिंग थ्योरी में किया जाता है। गणित छात्रों में दृढ़ता तथा आत्मविश्वास उत्पन्न करता है। सत्य अथवा असत्य की शुद्धि और अशुद्धि की जांच गणित के छात्रों में आत्मनिर्भरता तथा आत्मविश्वास उत्पन्न करता है। प्रो. उमेश कुमार गुप्त ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों में विज्ञान शिक्षा के प्रति रूचि जागरूक कर एक नई दिशा और मार्गदर्शन देना है। डॉ. रवीन्द्र नाथ शुक्ल स्वागत और डॉ. आकाश पांडेय ने धन्यवाद ज्ञापित किया। सेमिनार के संयोजक डॉ. अमित कुमार राय और डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव रहे, कार्यक्रम में, डॉ. आर.एन. यादव बी. एससी. भाग तीन के छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

## सत्र 2022-23 के वनस्पति विज्ञान विभाग की आख्या

सत्र 2022-23 में वनस्पति विज्ञान विभाग ने स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 के सीबीसीएस माध्यम से किया। स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर प्रायोगिक तथा सैद्धांतिक कक्षाएं सामान्य कक्षा अध्ययन के साथ-साथ सेमिनार, असाइनमेंट, शैक्षणिक भ्रमण आदि के माध्यम से संपन्न हुई। साथ ही साथ छात्रों के ज्ञान वर्धन हेतु वर्कशॉप, व्याख्यान तथा फील्ड ट्रिप आदि का आयोजन किया गया।



सत्र के आरंभ में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर बी.एस.सी. वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला का नामकरण सर जे.सी. बोस के नाम पर बोस प्रयोगशाला किया गया।

**प्रो.अवनीश**

प्रभारी

वनस्पति विज्ञान विभाग

दिसंबर माह के प्रथम सप्ताह में बायोटेक्नोलॉजी सेंटर तथा वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा जैव प्रौद्योगिकी व सूक्ष्मजैविकी तकनीक पर सात दिवसीय ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया। यह ट्रेनिंग प्रोग्राम डॉ. अनिता कुमारी की देखरेख में संपन्न हुआ और डॉ. गौरव कुमार श्रीवास्तव मुख्य ट्रेनर रहे।

इसके पश्चात दिनांक 8 दिसंबर से 13 दिसंबर तक वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा गार्डनिंग एवम बोनसाई तकनीक पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 350 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यशाला के आयोजन सचिव डॉ. आलोक रंजन रहे।

20 दिसंबर 2022 से 2 जनवरी 2023 तक वनस्पति विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ. अनिता कुमारी ने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ के वनस्पति विज्ञान से रिफ्रेश कोर्स पूर्ण किया।

दिनांक 23 फरवरी 2023 को वनस्पति विज्ञान विभाग द्वारा बौद्धिक संपदा के अधिकार विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता पेटेंट ऑफिस नई दिल्ली की पेटेंट और डिजाइन एग्जामिनर डॉ. शाहिदा उमर रही।

इस कार्यशाला के संयोजक प्रो. अवनीश, डॉ. अनिता कुमारी, डॉ. आलोक रंजन तथा श्री विशाल गुप्ता रहें।

तक तथा स्नातकोत्तर के छात्र-छात्राओं ने शैक्षणिक भ्रमण के माध्यम से अपने विषय को समझा। इस वर्ष स्नाकोत्तर के छात्र-छात्राओं ने नेपाल स्थित रामापिथेकस वानस्पतिक उद्यान किया।

इसके साथ ही विभाग के शिक्षकों ने विभिन्न सेमिनार/कॉन्फ्रेंस/वर्कशॉप में प्रतिभाग किया तथा आमंत्रित व्याख्यान दिया। साथ ही शिक्षकों ने शोध पत्र, बुक चैप्टर तथा बुक प्रकाशित किए।

इस सत्र में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने विभाग के 3 शिक्षकों प्रो. अवनीश, डॉ. अनिता कुमारी तथा डॉ. आलोक रंजन को पूर्ण कालिक शोध निर्देशक बनाया है।



# इनडोर पौधे

शहरों के ज्यादातर फ्लैट या अपार्टमेंट में हवा का परिसंचरण ( Air circulation ) अच्छा नहीं होता। घरों के बाहर भी पेड़-पौधे कम होने के कारण साफ और स्वच्छ वायु नहीं मिल पाती है। ऐसे में हवा को शुद्ध करने वाले पौधों की जरूरत और बढ़ जाती है।

हमारे घर के कई सामानों में ऐसे रसायन मिले होते हैं जो घर की हवा में विषैले तत्व और गैस धीरे-धीरे छोड़ते रहते हैं जैसे कि प्लास्टिक, फाइबर, रबर के बने कुछ सामान, मच्छर-काँकरोच मारने वाले स्प्रे, वार्निश, सफाई करने वाले केमिकल, बिजली के कुछ यंत्र, नए कालीन, पेंट, एयर फ्रेशनर आदि।

इन सब चीजों में कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई ऑक्साइड, फॉर्मल्डीहाईड, नाइट्रोजन के ऑक्साइड, बेंजीन, टॉल्यूइन, जाइलिन, अमोनिया, ट्राईक्लोरोईथिलीन आदि केमिकल और नुकसानदेह गैसों होती हैं जो सेहत के लिए हानिकारक है।

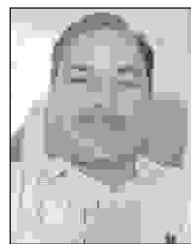
वैसे एयर कंडीशनर लगे होने की वजह से भी अक्सर घर की खिड़कियाँ बंद रहती हैं जो खुले भी तो बाहर से प्रदूषित वायु आती है। घर में बंद-बंद सी हवा हमारे सेहत के लिए नुकसानदायक है और सिरदर्द, थकान, ऐलर्जी, सांस की बीमारियाँ और अन्य रोगों को पैदा कर सकती है।

प्रदूषण के बढ़ते स्तर के साथ आसपास की हवा दिन ब दिन खराब होती जा रही है। ऑक्सीजन की कमी के चलते लोगों को सांस संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। बाहर जहरीली हो चुकी हवा को तो हम नियंत्रित नहीं कर सकते, लेकिन घर में आने वाले प्रदूषण और जहरीले पदार्थों से बचने के लिए हमें कदम उठाना होगा। ऐसा तरीका सोचना होगा, जिससे शुद्ध हवा मिले और घर के अंदर ऑक्सीजन की आपूर्ति भी होती रहे। ऐसे में घर में ऑक्सीजन देने वाले इंडोर प्लांट्स को रखना बेहतर विकल्प है।

पौधों को घर के अंदर रखने से न केवल हवा की गुणवत्ता में सुधार होता है, बल्कि आप मानसिक तौर पर खुद को स्वस्थ महसूस करते हैं। ये पौधे आंतरिक आर्द्रता को भी बनाये रखने में सहायक होते हैं। इंडोर पौधे आपके घर को खूबसूरत बनाते हैं। कई स्वास्थ्य लाभों के अलावा, इनडोर पौधे पूरे घर या ऑफिस को एक बहुत ही सुखद माहौल देती है। ये चिंता या तनाव को दूर कर सकते हैं। आप स्वास्थ्य लाभों और अच्छे वातावरण के लिए घर में इनडोर पौधे लगा सकते हैं।

घर पर आप कौन से इंडोर प्लांट्स लगा सकते हैं आइए जानें-

1. ऐरेका पाम- ( *Dyopsis lutescens* sp. )
2. एलोवेरा-घृत-कुमारी या ग्वारपाठा ( *Aloe vera* )
3. रबर प्लांट- Rubber plant ( *Ficus elastica* )
4. स्नेक प्लांट-Snake plant ( *Dracaena trifasciata* )
5. स्पाइडर प्लांट-Spider plant ( *Chlorophytum comosum* )
6. लेडी पाम-Lady palm ( *Rhapis excelsa* )
7. पीस लिली-Peace lily ( *Spathiphyllum wallisii* )
8. मनी प्लांट- Money plant or Golden Pothos ( *Epipremnum aureum* )
9. सिंगोनियम प्लांट-Syngonium Plant ( *Syngonium podophyllum* )



**प्रो.अवनीश**

प्रभारी  
वनस्पति विज्ञान विभाग

10. जरबेरा डेजी- **Gerbera Daisy** ( *Gerbera sp.* )
11. इंग्लिश आइवी-**English Ivy** ( *Hedera helix* )
12. बैम्बू पाम- **Bamboo Plam**( *Chamaedorea seifrizii* )
13. लकी बम्बू-**Lucky bamboo** ( *Dracaena sanderiana* )
14. बोस्टन फर्न- **Boston fern** ( *Nephrolepis exaltata* )
15. नीम का पौधा-**Neem plant**( *Azadirachta indica* )
16. तुलसी का पौधा-**Holy Basil plant**( *Ocimum sanctum* )
17. अनानास का पौधा-**Pineapple Plant**( *Ananas comosus* )
18. केला का पौधा-**Banana plant**( *Musa paradisiaca* )
19. फाइकस या वीपिंग फिग-**Ficus/Weeping Fig** ( *Ficus benjamina* )
20. ड्रेसिना के पौधे- **Draceana**
21. हार्ट लीफ फिलॉडेंड्रॉन-**Heart leaf Philodendron**( *Philodendron sp.* )
22. जेड प्लांट-**Jade plant**( *Crassula ovata* )
23. चायनीज एवरग्रीन-**Chinese evergreen plant**( *Aglaonema commutatum* )
24. क्रिसमस कैक्टस-**Christmas Cactus** ( *Schlumbergera bridgesii* )
25. आर्किड-**Orchid plant**
26. क्रिसैंथेमम-*Chrysanthemums*
27. किम्बर्ले क्वीन फन-**Kimberley Queen fern**( *Nephrolepis oblitterata* )
28. एन्थूरियम प्लांट या फ्लेमिंगो लिली-**Flamingo Lily/Anthurium Plant**( *Anthurium andraeanum* )
29. डाईफेनबेकिया- **Dumb cane or leopard lily** ( *Dieffenbachia* )
30. मोतियों की माला-**String of pearls plant**( *Senecio rowleyanus* )
31. स्विस् चीज प्लांट-**Swiss Cheese plant**( *Monstera adansonii* )
32. सतावरी-*Asparagus*
33. जी प्लांट-**ZZ plant**( *Zamioculcas zamiifolia*) etc.

### मोटिवेटेड कोट्स

- \* मेरा मानना है कि संघर्ष करना किसी की समस्या नहीं बल्कि ( बल्कि ) उसका शौक होना चाहिए। अगर ऐसा है, तो जीत सुनिश्चित है।
- \* खुद की खुशी के लिए कम से कम एक और व्यक्ति को खुश करना जरूरी है।
- \* हार तो वो सबक है जो हमें और बेहतर होने का मौका देती है।
- \* कुछ इस तरह चलें कि लोग आपके निशानों पर चलना शुरू कर दें।
- \* गिर गया था एक दिन रास्ते में पर तुरंत उठा और आगे बढ़ गया।
- \* जिसने ही खुद को खर्च किया है, लोगों ने उसी को सोशल मीडिया पर सर्च किया है।

**अभिषेक कुमार यादव**  
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष  
द्वितीय सेमेस्टर

## विज्ञान प्रदर्शनी एक बहुआयामी कदम

नेशनल एजुकेशनल सोसायटी के तत्वाधान में ललित कला महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 18.12.2022 को महाविद्यालय परिसर में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों के 430 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। विज्ञान प्रदर्शनी के मुख्य अतिथि क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी प्रो. अश्वनी कुमार मिश्रा जी, विशिष्ट अतिथि श्री मंकाेश्वर नाथ पांडेय जी रहे, निर्णायक मंडल में डीएवी पीजी कॉलेज की प्राचार्या प्रो. शैल पाण्डेय, गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्रो. निखिल कांत शुक्ला, सेंट एंड्रयूज पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज के डॉ हरिओम गुप्ता और सेंट



**प्रो. उमेश कुमार गुप्ता**  
प्रभारी, गणित विभाग

एंड्रयूज कॉलेज गणित विभाग के डॉ वी एन प्रसाद उपस्थित रहे। प्रदर्शनी के संयोजक प्रो उमेश कुमार गुप्त के नेतृत्व में यह प्रदर्शनी लगाई गई। विज्ञान प्रदर्शनी में कुल 84 मॉडल प्रस्तुत कर 430 छात्र-छात्राओं ने अपनी रचनात्मकता और परिकल्पना को प्रस्तुत किया। प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कॉलेज के प्रबन्धक श्री मंकाेश्वर नाथ पांडेय ने एमएससी जुलॉजी के छात्र-छात्राओं द्वारा प्रस्तुत मॉडल मेन्स्टुअल साइकिल मॉडल की तारीफ की और साथ ही सुगर फैंक्ट्री के मॉडल को उद्योग के लिये क्रांतिकारी मॉडल बताया। प्रो. अश्वनी मिश्रा जी ने स्मार्ट रिसाईक्लिंग डिवाइस को नयी परिकल्पना के साथ ही भविष्य के लिए बहुत उपयोगी बताया और प्राचार्य को निर्देशित किया की इस मॉडल को कैंपस में उपयोग में लाएं। प्रो. अश्वनी मिश्रा सर ने अपने संबोधन में कहा कि ये छात्र ही भारत के भविष्य हैं। उनकी परिकल्पना उन्हें महान वैज्ञानिक बनायेगी। प्रस्तुत प्रदर्शनी में

### **प्रथम पुरस्कार :**

#### **1. एम .जी. पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर**

Topic : Generation of clean energy and scheme for nitrogen fixation

आयुश सिंह, आश्रय शर्मा, सुधांशु तिवारी, आकाश सिंह, अंकित मौर्या, सौरभ द्विवेदी, रिषभदेव शुक्ला, हर्षित त्रिपाठी, आदर्श सिंह, ( सभी बी.एससी. तृतीय सेम. ), अमरेन्द्र प्रताप सिंह ( बी.एससी. प्रथम सेम. ) तथा धीरज ( बी.एससी. द्वितीय वर्ष )

### **द्वितीय पुरस्कार:**

#### **1. एम .जी. पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर**

टॉपिक : स्मार्ट रिसाइक्लिंग डस्टबिन

सुमित, मनीष, काजल, एवं आशीष

#### **2. दी. द. उ. गो. वि. गोरखपुर**

टॉपिक: हाइट मेजरमेंट डिवाइस

अभिनव ( एम.एससी. प्रथम वर्ष )



### तृतीय पुरस्कार :

#### एम .जी. पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर

1. टॉपिक : सुगर मैन्युफैक्चरिंग फैक्ट्री  
रूखसार बानो, मुस्कान बानो, उरूज, अपराजिता, अन्जु, अनुष्का, नादिया फरहीन, अंजली, आँचल, अनुज, तथा ज्योति ( सभी बी.एससी. द्वितीय वर्ष )
2. टॉपिक : मेंसटुअल साइकिल  
अलिजा आफरीन, अनिवेश शुक्ला, अमीषा, अनामिका, प्रगति, आस्था, सृजन, निकिता, नितू, तथा अंजली ( सभी एम.एससी., जन्तु विज्ञान प्रथम वर्ष )

### सांत्वना पुरस्कार:

#### एम .जी. पी. जी. कॉलेज, गोरखपुर

1. क्रिप्टोग्राफी  
अंजलि राय, हर्षिता शर्मा, अर्पिता श्रीवास्तव, स्मृति शुक्ला और तनु यादव ( सभी बी.एससी. तृतीय वर्ष )
2. टॉपिक: लाई-फाई  
हिमांशी, हर्ष, स्नेहा, और अदिति ( सभी बी.एससी. द्वितीय वर्ष )

को दिया गया। विज्ञान प्रदर्शनी में डॉ. सी. पी. सिंह, आर. के. शुक्ल, डॉ. संजय सिंह, डॉ. ब्रजेश कुमार गुप्त डॉ. आकाश पाण्डेय, डॉ. विकास सिंह, डॉ. विशाल गुप्त, डॉ. रितेश श्रीवास्तव तथा फणींद्र तिवारी आदि का विशेष सहयोग रहा।

## एक झलक राष्ट्र के लिए

सुनील कुशवाहा

बी.एससी., प्रथम वर्ष

पूछते हो जान कर क्यों कठिन पग हमने चुना है,  
कंटकों के नोक पर ख्वाब रेशम का बुना है।  
पूछते हो क्या मिलेगा तन्न पाकर जंगलों में,  
क्या कभी नर्मी मिलेगी रेत के जलते पलों में।  
दूर अपनों से कभी क्या नेह के झोंके बहेंगे  
पर्वतों पे जा के क्या स्वप्न आँखों में रहेंगे  
मुश्किलों के बोझ से रंग ना भर जाएंगी  
और दिन जवानी के क्या कभी लौट के फिर आयेंगी।  
तो हम तुम्हें इतना बता दे ये नहीं मजबूरियाँ हैं  
चाहते तो हम कहीं मस्त हो जीते जवानी  
राग में रस में उतर कर प्रीत की लिखते कहानी  
तितलियों के पंख पर प्रेम की कविता बनाते

शाम कर बाहें किसी का इन्द्रधनुष हम भी दिखाते  
रूप का श्रंगार करते, मिलन के स्वप्न सजाते,  
पुस्तकों में फूल रखते शायरी से प्यार करते।  
पर कहो क्या जिन्दगी में, और करना नहीं है।  
झुक कर जीना नहीं है, टेक कर मरना नहीं है  
क्या जवानी विषम राहों पर आगे नहीं बढ़ेगी  
क्या नहीं बलिदान देगी, क्या नहीं बढ़कर  
क्या अलग बैठी रहेगी, धरों में अनुराग बनकर  
क्या नहीं वो जला देगी, दुश्मनों को आग बनकर  
क्या जवानी के लिए बस आशिकी का गान होगा  
क्या नहीं उसके लिए कर्तव्य का अभिमान होगा।



# राष्ट्रीय सेवा योजना का संक्षिप्त इतिहास

स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद से ही छात्रों को राष्ट्र सेवा के कार्यों में संलग्न करने के बारे में विचार किया जाने लगा था। वर्ष 1950 में प्रथम शिक्षा आयोग ने छात्रों द्वारा स्वेच्छा से राष्ट्र सेवा के कार्य करने की संस्तुति की। शिक्षा आयोग की संस्तुति पर स्वर्गीय प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने डा० सी०डी० देशमुख की अध्यक्षता में एक समिति गठित की जिसका उद्देश्य डिग्री स्तर के पूर्व छात्रों को अनिवार्य रूप से राष्ट्र सेवा के कार्यों में लगाए जाने की संभावनाओं का पता लगाना था। इस कार्य के लिए प्रोफेसर के०जी० सैप्युद्दीन की नियुक्ति की गयी। उन्होंने विभिन्न देशों में छात्रों द्वारा किये जा रहे राष्ट्र सेवा के कार्यों का अध्ययन करके राष्ट्र सेवा को स्वैच्छिक बनाने का सुझाव दिया। ठीक यही संस्तुति डा०डी०एस० कोठारी की अध्यक्षता में गठित शिक्षा आयोग ने भी की।



**डॉ. रवीन्द्र नाथ गुप्तल**  
संयोजक, एन.एस.एस.

वर्ष 1967 में राज्यों के शिक्षा मंत्रियों की बैठक में यह निर्णय लिया गया कि छात्र विश्वविद्यालय स्तर पर मौजूदा नेशनल कैडेट कोर में एवं अन्य छात्रों की राष्ट्रीय सेवा योजना ( एन० एस० एस० ) के कार्यक्रमों में भाग लेने की छूट छात्रों को दी गयी।

उपरोक्त संस्तुतियों के आधार पर चतुर्थ योजना आयोग ने देश के कुछ चुनिंदा विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम चलाए जाने हेतु 5 करोड़ रुपये व्यय करने की स्वीकृति प्रदान की। इस प्रकार शिक्षा मंत्रालय द्वारा वर्ष 1969-70 में राष्ट्रीय सेवा योजना का शुभारम्भ हुआ। यहां इस तथ्य का उल्लेख करना समीचीन होगा कि वर्ष 1969 राष्ट्र पिता महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी थी। वर्ष 1993 से इस कार्यक्रम का रजत जयन्ती वर्ष प्रारम्भ हुआ एवं कुछ कार्यक्रमों का अतिरिक्त लक्ष्य स्वीकार किया गया है। इस योजना के शुभारम्भ के लिए इससे बढ़कर और कौन सा सुअवसर हो सकता था। वास्तव में यह घटना समाज सेवा के कार्यों के प्रति निष्ठावान बनने के लिए उनके प्रति मूक श्रद्धांजलि थी।

## लक्ष्य एवं उद्देश्य

**लक्ष्य:-** सामुदायिक सेवा के माध्यम से स्वयंसेवकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।

**उद्देश्य:-**

1. जिस समुदाय में स्वयंसेवक कार्य करते हैं उस समुदाय को समझना।
2. अपने समुदाय के परिप्रेक्ष्य में स्वयं को समझना।
3. समुदाय की आवश्यकताओं और समस्याओं की पहचान करना और उसके समाधान की प्रक्रिया में सम्मिलित होना।

4. स्वयंसेवकों में सामाजिक व नागरिक दायित्व बोध विकसित करना।
5. व्यक्तिगत तथा सामुदायिक समस्याओं के निदान में अपने व्यवहारिक ज्ञान का उपयोग करना।
6. सामूहिक जीवन और जिम्मेदारी में सहभाग की योग्यता विकसित करना।
7. सामूहिक भागीदारी को सक्रिय करने की कुशलता प्राप्त करना।
8. नेतृत्व क्षमता व लोकतांत्रिक प्रवृत्ति अर्जित करना।
9. आपातकाल व प्राकृतिक आपदाओं से निपटने के लिए क्षमता विकसित करना।
10. राष्ट्रीय एकता व सामाजिक सौहार्द का अभ्यास करना।

## ध्येय वाक्य ( MOTTO ) NOT ME BUT YOU ( मुझे नहीं आपके लिए )

राष्ट्रीय सेवा योजना का ध्येय वाक्य यह बताता है कि हम दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण की सराहना करने वाले बनें तथा दूसरों को सम्मान व श्रेय देने वाले बनें।

### राष्ट्रीय सेवा योजना का बैज

राष्ट्रीय सेवा योजना का प्रतीक चिन्ह उड़ीसा के कोणार्क सूर्य मन्दिर के रथ चक्र पर आधारित है जो निरन्तरता और परिवर्तन का द्योतक है। यह चिन्ह राष्ट्रीय सेवा योजना के बैज पर उत्कीर्ण है। रा०से०यो० के स्वयंसेवक समाज की सेवा के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते समय उसे लगाते हैं। कोणार्क के सूर्य मन्दिर में रथ में 24 पहिए हैं जो सम्पूर्ण दिन के 24 घण्टों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्रत्येक पहिए में 8 तीलियां हैं जो 8 पहर दर्शाती हैं। इसलिए जो व्यक्ति इस बैज को धारण करता है उसे बैज याद दिलाता है कि वह राष्ट्र सेवा के लिए दिन-रात अर्थात् 24 घण्टे ( आठों पहर ) तत्पर रहें। बैज में जो लाल रंग है वह इस बात का संकेत करता है कि रा० से० यो० के स्वयंसेवकों में पूरा उत्साह है और वे जीवन्त हैं, सक्रिय हैं और उनमें स्फूर्ति है जिसका रा० से० यो० एक छोटा सा अंश है और जो मानव मात्र का कल्याण करने के लिए अपना अंशदान करने को तैयार है।

### युवा संकल्प

एक युवा ही देश की सोच को बदलता है  
वो अपने सोच के साथ अपने आने वाली पीढ़ियों को  
भी एक नयी सोच की तरफ मोड़ता है...

यदि आप युवा हैं तो आपके पास  
जिंदगी को जीने का मकसद होना चाहिए  
और उस मकसद के सहारे हर जंग से लड़ना चाहिए...॥

### हर्ष प्रताप सिंह

बी.एससी., प्रथम वर्ष



# THE ROLE OF DISCIPLINE IN EDUCATION AND ITS IMPACT ON THE PROCESS OF LEARNING

Discipline is a deliberate attempt to regulate behaviour. It impacts the learning process by creating a stress free environment and maintains a daily routine thus moulding the learner's character who then positively contributes towards a better society. Discipline begins from a very early age right from ones home which we consider to be our first school. Thus parents have to be equally aware of instilling discipline within their children. Parents and educators are the two pillars with a significant influence on growing learners. Various studies have shown a positive link between discipline in learners and their school performance. Thus arises a strong need to strengthen guidance and counseling in schools, to help learners attain set values. Under the supervision of parents and schools, the self disciplined learners will be sure to achieve great heights.



**Dr. Alok Ranjan**  
Assistant Professor, Botany

## **Punishment & the child's development & learning process:**

Punishment is used as a tool to regulate behaviour. It can be either positive or negative. Positive punishments can be like elimination of awards and negative punishments are corporal ones which are now abolished and are considered illegal. A punishment delivered immediately is the most effective. Positive discipline allows students to learn and adapt their behaviours to meet expectations in the classroom, while simultaneously teaching them how to make better choices in future.

## **Alternative ways of enforcing positive discipline:**

- (1) **Learning 'to be':** Learners are taken through the process of self knowledge & motivating them to see the importance of acquiring necessary skills and attitudes to improve their personality.
  - (2) **Taking away privileges:** Like abstain from watching TV, visiting friends, receiving pocket money & teach them positive attitudes through praise and recognition.
  - (3) **Time out:** Involves removing the child from the situation to give time for reflection about the consequences of the offending behaviour.
  - (4) **Positive reinforcements:** Through appreciating excellence in performance.
- Good school discipline depends not only on non-violent responses to poor learner behaviour, but also on skilled & properly trained teachers.

### **Importance of imparting discipline:**

Discipline is not just a moral value but it is the most powerful virtue that is necessary to be successful in life. One can not achieve the goals of life without being disciplined. Every single person needs to be disciplined. However, it is not to be achieved in a day. It takes years to learn this trait. This is the reason why school plays a crucial role in imparting discipline and creating well balanced individuals. Discipline is a way in which we align our body, mind and our soul to follow a proper order. Discipline is the only way which brings stability in a person's life. Therefore, it is important to create a learning environment in the school.

Discipline is a way to set limits for the children so that they know what is right and what is wrong. This improves the character of the students and they become strong and self-reliant and develops the analytical skills of the students, and gets accustomed to solve real-life challenges.

Also when a child inculcates discipline at a tender age, they follow it in their entire lifetime. Discipline also fosters in creating strong bonds among the students and teachers, students and parents and values the limits of the relationships. The student realizes and knows the limit in which he has to behave with his teachers, parents and elders.

### **How can teachers maintain discipline?**

In the present educational institutions educators are also responsible for the moral development of the learners and to ensure they become law-abiding citizens. For this purpose the teachers should interact with the students on a personal level. The teachers should seek attention of the students before beginning any topic so as to gain their full attention and be disciplined. Frequent eye contact and a positive presence of the teachers brings discipline in classroom. Last but not the least exhibit respectfulness, trust, enthusiasm, interest and courtesy in your everyday dealings with students, they will return the favour because we all are aware of the very old saying-“Values are caught, not taught”.



## सोशल मीडिया और हमारा मानसिक स्वास्थ्य

आज विज्ञान के बढ़ते प्रादुर्भाव का एक बहुत बड़ा चमत्कार हमारे पास है जिसे हम सभी सोशल मीडिया के नाम से जानते हैं। आज दूरस्थ सम्बन्धों को बहुत सहजता के साथ संजोने का एक बहुत मजबूत साधन उपलब्ध है, जिसे हम सभी सोशल मीडिया के नाम से जानते हैं। लेकिन सवाल ये उठता है कि इसका उपयोग हम किस प्रकार या परिप्रेक्ष्य में करते हैं। आज का युवा अपनी संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए सोशल मीडिया जैसे प्लेटफार्म का उपयोग धड़ल्ले के साथ करता नजर आ रहा है। मैं एक मनोवैज्ञानिक होने के कारण एक अपील करना चाहूँगी की आज हमें और आपको थोड़ा सावधान होने की आवश्यकता है।



डॉ. सुष्मिता उपाध्याय  
प्रभारी  
मनोविज्ञान विभाग

कहीं ऐसा ना हो कि हमारी अभिव्यक्तियां अन्य लोगों के मानसिक शोषण का कारण बन जायें। मनुष्य का जीवन मिला है तो अनवरत सम्बन्धों का ताना-बाना जीवन पर्यन्त चलता ही रहेगा, क्योंकि यही हमारे जीवित होने का प्रमाण है। जीवन में संवेगों की बहुलता होती है। कहीं क्रोध, कहीं दुःख, तो कभी साहस, घृणा, लगाव इत्यादि संवेदनाओं की धारा अविरल हमारे हृदय एवं मष्तिष्क में प्रवाहित होती रहती है। सजगता एवं धैर्य इन संवेदनाओं को सलीके से सम्भालने का एक बहुत अच्छा साधन है। जब भी कोई एक विशेष मनोभाव व्यक्तियों पर हाबी होने लगे, तो उसे अपने धैर्य के लगाम को साथ बाँध कर ही अपने व्यवहार के अगले चरण का निर्णय लिया जाना सर्वथा उचित होता है। विशेष रूप से हमारे अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में, आज हमारे युवाओं को थोड़ा सजग होने की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में निर्वाह की अवधारणाओं को लेकर ही बहुत सारे संस्कार बनाये गए हैं। यह बिल्कुल आवश्यक नहीं कि आज आप के सम्बन्ध किसी के साथ बहुत अच्छे हैं, तो आज से कुछ वर्षों बाद भी वैसे ही रहेंगे, उन सम्बन्धों का स्वरूप थोड़ा जरूर बदल जायेगा। समय के प्रत्येक चरण में प्रकृति ही बदलाव करती है, तो यह तो फिर भी आपके द्वारा बनाये गये सम्बन्ध हैं। जी हाँ बिल्कुल मैं प्रेम सम्बन्धों की बात कर रही हूँ।

आज समाज में अधिकाधिक संख्या में युवाओं में प्रेम-सम्बन्धों के विच्छेदन के कारण अनगिनत समस्याएं उत्पन्न होती हुई दिखाई पड़ रही हैं। जिसका बहुत बड़ा कारण है सोशल मीडिया की चकाचौंध जो लम्बे समय तक एकरसता नहीं बनाये रख पाते हैं और उनका दिमाग बहुत जल्दी थक जाता है। धैर्य समाप्त हो जाता है, क्योंकि उनकी उँगलियाँ अनवरत अपने मोबाइल पर क्रियाशील रहती हैं। जीवन की खुशियां बटन दबाने तक सिमित हो कर रह गई हैं।

कोई भी नई जगह, या नया कार्य करने पर बजाय इसके कि उस कार्य में तल्लीन होकर उन अविस्मरणीय भावों को जीवन्त कर उसमें सम्पूर्ण आनन्द लिया जाय, हम वहां भी उसे अपने कैमरे में कितने अच्छे ढंग से कैद कर सकते हैं, इसी फिक्र में विडियो और फोटो के लिए स्वयं को व्यवस्थित ही करते रह जाते हैं। आँखों में जो खुशियों की झलक होती है, हृदय में जो प्रेम का स्पन्दन होता है, वो उस कैमरे में नहीं होता, क्योंकि वो तो मात्र एक साधन है, अपनी स्मृतियों को संजोने का। लेकिन हम सब के लिए तो पल बहुत अनमोल और अविस्मरणीय होना चाहिए जब हमारे हृदय में प्रसन्नता का, प्रेम का, स्नेह का संवेग उमड़ता है। इसलिए कहा भी गया है की कई सारी हमारी भावनाएं मनोदशाएं शारीरिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से हो जाती हैं।

जी हाँ आप साधन को मात्र एक साधन ही मानें, जब आपको उसकी आवश्यकता महसूस हो तभी आप उसका उपयोग करें। यह सर्वथा स्मरण रहे कि साधन आपके कार्यों को सुगम बनाने के लिए होते हैं न की साधन के निमित्त आप का जीवन चलायमान हो जाय। सोशल मीडिया निश्चित रूप से हम सभी के लिए संचरण का एक सशक्त माध्यम है। परन्तु इस माध्यम को मात्र माध्यम ही रहने दिया जाय न की मनुष्य की संवेदनाओं के साथ खिलवाड़ करने वाला एक यन्त्र बना डाला जाय। हमारे आज के युवा यह याद रखें की उनको बहुमूल्य जीवन को आसान बनाने के लिए सोशल मीडिया महज एक साधन है, न की सोशल मीडिया से संचालित होने का साधन मनुष्य है।

## मेरी परछाई

बैठी थी एक रोज अकेली मैं,  
ऐसा लगा साथ कोई बैठा है।  
ध्यान से देखा तो वो मेरी ही परछाई थी,  
लेकिन खामोश, निराश और उदास।  
मैंने पूछा क्या हुआ है तुम्हें?  
उसने कहा तुम्हारी औरों से उम्मीदें सबब है इन सबका  
मैं चौंकी और पूछा उम्मीदें करना गलत है क्या?  
वो मुस्कुराई और बोली औरों से उम्मीदें गलत हैं।  
मैंने बोला तुम्हारी बातें मैं न समझी,  
ये सुन वो बोली तुम्हारी नासमझी ही तो सबब है इन सबका।  
फिर उसने मेरा हाथ थामा और बोली,  
उम्मीदें खुद से हों तो ताकत बनती हैं और औरों से हों तो कमजोरी।  
वो बोली उम्मीदें खुद से हों तो खुशी की वजह  
और औरों से हों तो उदासी का कारण  
अचानक किसी ने आवाज लगाई मुझे,  
मैं चौंकी मैंने देखा कोई नहीं था पास मेरे।  
मैं उठी, अपनी खामोशी, निराशा और उदासी को उतार फेंका,  
और चल दी अपनी उम्मीदों पर खरा उतरने के लिए।



**आकॉक्षा सिंह**  
सहायक आचार्य  
भौतिकी विभाग

## Keys To Success

- \* Understanding problem as a problem is a big problem...  
So always look for the possible solutions.
- \* Dont be afraid of with the changes in life instead welcome it  
because it can show you a way to move ahead.
- \* Avoid the habit of evading,.... do the work that you have to do today,  
success will definitely touch the step.
- \* For success, you need to change your thoughts and have to work  
hard because nothing is impossible, the word itself says.....  
I...m...possible.



# विज्ञान प्रदर्शनी

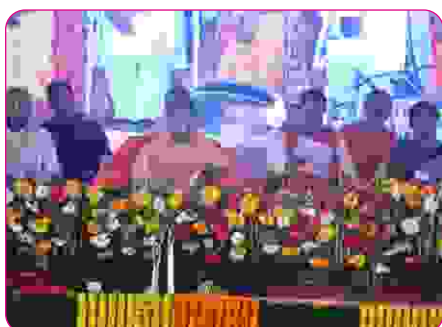


विज्ञान प्रदर्शनी





## पूर्व प्रबन्धक स्व. प्रेम नरायन श्रीवास्तव जी की प्रतिमा का अनावरण



## शिक्षणेत्तर परिवार



**बैठे हुए (बाएं से दाएं):** श्रीमती शशिबाला श्रीवास्तव, श्री जिनकू प्रसाद, श्री अनिल कुमार नायक, श्री कमलेश लाल, प्रो. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. विवेक कुमार यादव, श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती रीता शुक्ला, श्रीमती विनीता श्रीवास्तव।

**खड़े हुए प्रथम पंक्ति में (बाएं से दाएं):** श्रीमती सुरेखा देवी, सुश्री पूर्णिमा शर्मा, श्रीमती केतकी देवी, श्री आन्जनेय गुप्ता, श्री शशांक शेखर श्रीवास्तव, श्री अमृत लाल, श्री धनन्जय कुमार श्रीवास्तव, श्री महेश चन्द्र मौर्य, श्री शिवम् आनन्द, श्री कुलदीप सहाय, श्री प्रमिल मिश्रा, श्री चन्द्र प्रताप यादव, श्री मनोज कुमार, श्री मकरध्वज पाण्डेय, श्री अनिल कुमार गुप्ता।

**खड़े हुए द्वितीय पंक्ति में (बाएं से दाएं):** श्री राजेश यादव, श्री सुरेश प्रसाद, श्री बृजराज, श्री शैलेन्द्र कुमार, श्री आलिम, श्री सद्दाम, श्री मेहताब आलम, श्री संदीप पटेल, श्री युसूफ।

**खड़े हुए तृतीय पंक्ति में (बाएं से दाएं):** श्री विनय कुमार, श्री गुड्डू श्रीवास्तव, श्री अमरनाथ गौड़, श्री रामधनी, श्री सुनील कुमार गौड़, श्री दिलीप कुमार, श्री रामाज्ञा, श्री बृजेश मिश्रा, श्री त्रिलोकी यादव, श्री धर्मवीर शर्मा, श्री ईश्वर चन्द्र यादव, श्री अब्दुल।

### संपादक मण्डल



**बैठे हुए (बाएं से दाएं):** डॉ. शक्ति सिंह, डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह (मुख्य संपादक), प्रो. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. अलोक रंजन, डॉ. सदफ अतहर।

**खड़े हुए (बाएं से दाएं):** शांभवी पाण्डेय, साधना गुप्ता।

### एन.एस.एन.



**बाएं से दाएं:** श्री शशांक शेखर श्रीवास्तव, डॉ. विवेक कुमार यादव, प्रो. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), श्री कमलेश लाल, श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, श्रीमती विनीता श्रीवास्तव, श्रीमती रीता शुक्ला, सुश्री पूर्णिमा शर्मा।



**बाएं से दाएं:** डॉ. अनिल कुमार मिश्रा, डॉ. अनिल कुमार सिंह (प्राचार्य), डॉ. आर. एन. शुक्ला, डॉ. अजय कुमार श्रीवास्तव

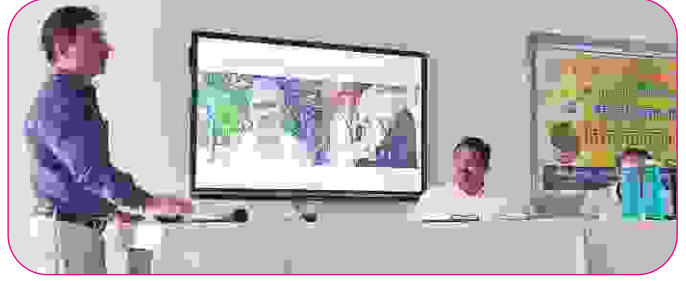
# ललित कला महोत्सव के अन्तर्गत पुरातन छात्र सम्मेलन



# शैक्षणिक भ्रमण



# महाविद्यालय की विभिन्न गतिविधियाँ





## सकारात्मक अनाज

" Get back to nature with wholesome "

When food is wrong.  
Medicine is of no use.  
When food is right.  
Medicine is of no need.

**Dr. Khadar Vali**



**डॉ. शक्ति सिंह**

( पोषण विशेषज्ञ )

प्रभारी, गृह विज्ञान विभाग

आज हमें यह सोचने की जरूरत है कि वर्तमान में जितनी बीमारियाँ हैं उतनी अधिक बीमारियाँ आज से 30-35 वर्ष पूर्व नहीं होती थीं अर्थात् हमारे पूर्वजों को इतनी अधिक बीमारियों का सामना नहीं करना पड़ता था। यहीं से एक प्रश्न उठता है कि हमारे पूर्वज ऐसा क्या खाते थे कि वो अधिक स्वस्थ रहे थे अर्थात् वो ज्यादा बीमार नहीं पड़ते थे, उन्हें इतनी प्रकार की बीमारियों का सामना नहीं करना पड़ता था। उनके स्वस्थ जीवन का राज उनका शुद्ध संतुलित, मिश्रित तथा प्रकृति पदत्त खान पान होता था। उनके द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले अनाजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी जो उन्हें अधिक स्वस्थ तथा शक्तिशाली बनाता था।

भारत वर्ष में घर-घर में सर्वाधिक मात्रा में उपयोग में लाया जाने वाला कोई खाद्य पदार्थ है तो वह अनाज ही है। हमारे घरों में सर्वाधिक प्रयोग में लाया जाने वाला अनाज गेहूँ तथा चावल है। वर्तमान परिदृश्य में मनुष्य की जीवन शैली में व्यस्तता अधिक होने के कारण उसके पास समय का अभाव है, जिस कारण से वह पैकड तथा आसानी से उपलब्ध खाद्य पदार्थों की ओर भागता है। ऐसी स्थिति में बाजार में गेहूँ आटा तथा विभिन्न प्रकार के चावल ही नजर आते हैं जो उसके मुख्य आहार का प्रमुख आधार हैं।

पुरातन समय की ओर नजर दौड़ाते हैं तो हम पाते हैं, कि वहां पर मिश्रित अनाजों के सेवन की परम्परा रही है। यदि वो दाल भी खाते थे तो हफ्ते भर अलग-अलग प्रकार की दाल अथवा मिश्रित दालों का उपयोग करते थे। किन्तु वर्तमान समय में ज्यादातर मनुष्य एक ही प्रकार के अनाजों तथा डिब्बा बंद खाद्य पदार्थ, रिफाइन्ड पदार्थ, जंक तथा फास्ट फूड का सेवन करता रहता है, परिणाम स्वरूप ब्लड प्रेशर, डायबिटीज, हृदय रोग, कैंसर, लीवर तथा किडनी खराब होने जैसी बिरली बीमारियाँ आम हो गई हैं।

अब बात यह आती है कि हम जानें की ऐसा कौन सा आहार/अनाज है जिसके नियमित सेवन से हम बीमारी से बच सकते हैं और यदि बीमारी हो भी जाती है तो इनके लगातार सेवन से गंभीर बीमारियाँ ठीक भी हो सकती हैं।

**अनाज के प्रकार:** यदि हम अनाजों के प्रकार की बात करते हैं तो ये दो प्रकार के होते हैं-

नकारात्मक अनाज ( Negative Grains ) और सकारात्मक अनाज (Positive Grains )। जी हाँ अनाजों में यह गुण विद्यमान होता है तभी कहा भी गया है कि जैसा खाएँ अन्न, वैसा रहे मन।

**नकारात्मक अनाज:** नकारात्मक अनाज वे होते हैं जो हमारे शरीर को बीमार करते हैं तथा किसी न किसी रूप में इनके लगातार सेवन करते रहने से हमारे शरीर पर बुरा प्रभाव पड़ता है, उदाहरण-गेहूँ तथा चावल। इन्हें नकारात्मक अनाज इसलिए माना गया है क्योंकि ऐसे अनाजों में उपस्थिति कार्बोज तथा फाइबर का अनुपात दहाई के आँकड़े अर्थात्-10 या 10 से ऊपर होता है और ऐसे अनाज हमारे शरीर के रक्त में शर्करा बहुत तेजी से छोड़ते हैं अथवा इनका GI ( ग्लाइसेमिक इंडेक्स ) 70 से ऊपर होता है। शरीर को अधिक मात्रा में शुगर अर्थात् शर्करा प्राप्त होता है।

### **सकारात्मक अनाज (Positive Grains)**

सकारात्मक अनाज क्या होते हैं? जिन अनाजों में कार्बोज तथा फाइबर का अनुपात इकाई के अंक में अर्थात् सिंगल डिजिट में आता है ( 10 से कम ) वे सभी अनाज सकारात्मक अनाजों की श्रेणी में आते हैं। ऐसे अनाज शरीर के रक्त में शर्करा को बहुत धीरे-धीरे छोड़ते हैं जिससे शरीर को शर्करा एक साथ ज्यादा मात्रा में नहीं मिलती। परिणाम स्वरूप लगातार क्रियाशील तथा उर्जावान बना रहता है। ये दुनिया के सर्वोत्तम अर्थात् बेस्ट अनाज होते हैं। हमारे शरीर में 5 लीटर रक्त में 5 ग्राम शर्करा की आवश्यकता होती है परन्तु जब रक्त में शर्करा की मात्रा बढ़ जाती है तो रक्त गाढ़ा होने लगता है और जिससे शरीर में गंदगी या विषाक्त ( Toxic ) पदार्थों की मात्रा बढ़ जाती है, परिणाम स्वरूप हम ज्यादा बीमार पड़ते हैं।

सकारात्मक अनाजों में हीलिंग प्रापर्टी होती है जो किसी भी तरह की बीमारी को ठीक करने में सहायता करता है। इनमें प्रोटीन तथा लौह तत्व सर्वाधिक शुद्ध रूप में उपस्थित होता है साथ ही इनमें पाया जाने वाला मिथियोनिन तथा लायसिन तत्व हमारी त्वचा को कोमल तथा क्रान्तिवान बनाए रखता है। इन अनाजों में उपस्थित विटामिन डी तथा कैल्शियम भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो हमारे रक्त, ब्रेन तथा हड्डियों के लिए आवश्यक है।

तो अब हमारे मन में स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि ऐसे अनाज कौन से होते हैं? जी हाँ इन्हीं अनाजों की 2023 में खूब चर्चा है। इन्हें ही मिलेट्स या मोटे अनाज अथवा “श्री अन्न” के नाम से हम जानते हैं और वर्तमान सरकार विलुप्त प्राय हुए इन अनाजों की जो हमारे पूर्वजों की थाली की शोभा बढ़ाते थे, जिनका चलन वर्तमान में न के बराबर रह गया है इनसे सभी को रूबरू कराने का प्रयास कर रही है और इसी श्रृंखला में हम मिलेट्स वर्ष-2023 भी मना रहे हैं।

इन अनाजों की श्रेणी में कंगनी ( Foxtail Millet ) वैज्ञानिक नाम ( *Setaria italica* ) जिसमें कार्बोज, फाइबर, फास्फोरस, पोटैशियम, विटामिन E, मैग्निशियम, विटामिन ए, कैल्सियम, आयरन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

**कोदो** ( Kodo Millet ) इसका वैज्ञानिक नाम *Paspalum scrobiculatum* है यह Poaceae Family का पौधा होता है। इसमें उपरोक्त पोषक तत्वों के साथ-साथ विटामिन B<sup>1</sup> तथा B<sup>5</sup> एवं विटामिन 'K' भी पाया जाता है। साथ ही इसमें anti allergic, anti bacterial Properties पायी जाती है। इसका उपयोग मधुमेह, कैंसर, कुपोषण, मोटापा, जोड़ो के दर्द में, महावारी के समस्याओं को कम करने में तथा कब्ज में किया जाता है । इसमें पाया जाने वाला Collagen प्रोटीन त्वचा के स्वास्थ्य तथा झुर्रियों को कम करने में सहायक होता है।



**कुटकी (Kutki Millet):** वैज्ञानिक नाम Panicum Sumatrense है तथा इसे Little Millet के नाम से भी जाना जाता है। यह भी सभी प्रकार के पोषक तत्वों से भरपूर होता है।

**झंगोरा (Browntop Barnyard)/ साँवों (Shama Millet):** जिन व्यक्तियों को Gluton से एलर्जी होती है वो इसका प्रयोग आसानी से कर सकते हैं। यह उच्च गुणवत्ता युक्त प्रोटीन से भरपूर होती है।

उपरोक्त सभी मोटे अनाज सकारात्मक अनाज की श्रेणी में आते हैं क्योंकि इन अनाजों का कार्बोज तथा फाइबर का अनुपात इकाई में अर्थात् 10 से कम होता है। C/F Ratio 5.5 to 7.57 होता है।

**तटस्थ मिलेट्स (Neutral Millet):** ये वे अनाज होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए उत्तम अनाज होते हैं जो स्वास्थ्य के लिए उत्तम होते हैं ये किसी बीमारी को बढ़ने से रोकते हैं परन्तु किसी बीमारी को ठीक करने में सहायक नहीं होते हैं।

**उदाहरण-** बाजरा, रागी, चना, मडुआ, मक्का तथा ज्वार आदि आते हैं। इन अनाजों जैसे-बाजरा ( Pearl millet ), रागी ( Finger millet ), चना ( Proso Millet ), मक्का ( Corn Millet ), ज्वार ( Sorghum Millet ), बाजरा ( Great Millet )। इनका C/F Ratio 20.19-65.91 होता है। नकारात्मक अनाज जैसे- गेहूँ C/F Ratio 63.00 तथा चावल C/F Ratio 395.00 होता है।

वर्तमान समय में हम पाते हैं कि Low Carbs, No carbs तथा High carbs की बातें ज्यादातर होती हैं परन्तु वास्तविक रूप से देखा जाए तो हमें Slow Carbs की तरफ ज्यादा जागरूक होने की आवश्यकता है। कार्बोज हमारे शरीर को ऊर्जा प्रदान करने का प्रमुख स्रोत है।

अतः हमें उन अनाजों का सेवन करना चाहिए जो हमारे शरीर में बहुत धीरे-धीरे कार्बोज छोड़ता है। जब हम गेहूँ तथा चावल खाते हैं तो यह आधे से एक घंटे के अंदर-अंदर 30-40 gm ग्लूकोज ब्लड में आ जाता है। चिल्ला/परौठा अगर हम मिलेट्स का प्रयोग करते हैं या इनसे बनी रोटी, दलिया, उपमा, खिचड़ी, खीर, लड्डू, डोसा, इडली आदि का सेवन करते हैं तो 8 घंटे में 30-40 gm ग्लूकोज रिलीज करते हैं। इसी कारण से इन्हें Poisitive Millets कहते हैं। साथ ही इनको उगाने में बहुत ही कम मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है। उत्तर प्रदेश तथा आन्ध्र प्रदेश भर में गेहूँ तथा चावल उगाने में जितना पानी लगता है उतने पानी में यदि मिलेट्स उगाए जाएं तो पूरा विश्व खा सकता है। मिलेट्स उगाने में किसी भी तरह के रसायनिक उर्वरक, कीटनाशक आदि की आवश्यकता नहीं होती। अतः ये स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह सुरक्षित तथा फायदेमंद होते हैं। अतः अब सकारात्मक अनाजों की महत्ता को समझते हुए इनको अपने आहार में शामिल करने का प्रयास निश्चित रूप से करेंगे।

हम वापस वहीं पर आते हैं जहाँ से शुरूआत की थी। Millets man of India Dr. Khadar Vali साहब की बातों से कि “ अगर हमारा भोजन गलत है तो कोई भी दवा हमें सही नहीं कर सकती और अगर हमारा भोजन सही है तो किसी भी दवा की जरूरत नहीं है।” इसके साथ-साथ ही हम अपने पूर्वजों को याद करते हुए वो खाने की कोशिश करें जो हमारे पूर्वज खाते थे और स्वस्थ रहते थे।

# The Need to Reclaim Our Traditional Foods

TV commercials of food items show " smart" and " modern" Looking girls playing wives who are worried about their husband's rising cholesterol, heart health etc. The husband's only chance of fixing his health issues is through the wife switching from home-cooked, traditional Indian breakfast meals to oats, cereals, refined products- **Healthier, tastier and so convenient.** And then there are ads of children indulging in chocolate cereals that would make them **taller, stronger and sharper**, really!!!

As a matter of fact, there's nothing healthier about these food products especially processed cereals than the traditional, home-cooked food items that you and your body have been used to for years. Infact the converse is true. **The benefits from sticking to traditional Indian foods far outweigh the touted benefits of these foreign and ' modern' options.**

Thanks to globalization, various junk foods belonging to global cuisine have crept into your daily diet plan in the last couple of decades. Processed foods like cereals, instant noodles, and ready-to-eat meals have become the go-to food options for many people due to their convenience and marketing strategies. However, these foods are often high in sugar, salt, and unhealthy fats, and are stripped of essential nutrients during processing. The excessive consumption of such foods has been linked to several health problems, including obesity, diabetes, and heart disease.

If you ask, which one is better from the taste point of view , the battle between imported food and its healthy Indian alternatives never ends. Mindful eaters might argue that nutritional food items are tastier too but when it comes to choosing between the two, ready-to-eat food always wins the race.

But why ? Well, agree or disagree cravings are irresistible and unhealthy eating habits are actually a norm. We can kill our midday hunger pangs with an apple or a fistful of nuts, but most of us end up nibbling upon a pile of french fries or Pizza and even guzzle down fizzy drinks. It in fact, has become a mammoth task for these days parents in convincing their children to pick fresh veggies, fruits, nuts, salads, soups over these unhealthy and calorie loaded recipes.

Most of the advertising of processed and packaged food items focus on three major '**USPs**' : **convenience, taste and nutrition.** As consumers, it is prudent to question and debunk the myth of these so-called benefits.

Let,s fact-check considering some examples:

## **Myth#1: Oats & Cereals taste just as good:**

No way! Just because the claim is repeated frequently doesn't make it true. Unlike the western ' consumerist culture' of sweet, cold cereal breakfasts, we have a tradition for hot, savory breakfast that makes us feel more satiated, thereby reducing sweet cravings throughout the day. Oats is an acquired taste that our Indian palate has to really get used to. Our taste buds- and our bodies- are attuned to a particular taste, and it is in our best interests to have the food that we are **genetically-compliant** with. The value of locally available food cannot be overstated, as more research in the field of nutrition science continues to prove. For ages, we have espoused the ' emotional' benefits of mother's cooking ( or home cooked food, in general), and science also emphatically backs that up now. Let's respect the fact that a lot of our inherent tastes are ' genes' !



**Dr. Priyanka Srivastav**  
Assistant Professor  
Department of Home Science

**Myth#2: Ready- to eat breakfast cereals are immensely convenient:**

...hmm... and so are a pack of instant noodles or chips! You know what those foods generally get categorized as, don't you: junk food. The question really is:

**convenience at what cost ?** What are we losing-in terms of quality, nutrition and taste-in the quest for 'processed' Convenience ? Unlike fresh, ghar kaa naashta, these industrialized and commercial convenience ready-to eat meals, are loaded with preservatives, artificial colors, emulsifiers, flavoring agents etc.

More importantly, it is worthwhile to ask ourselves how much more inconvenient it is to freshly cook a traditional Indian breakfast than to have a processed cereal or an oats upma or oats dosa? just reflect on the innumerable breakfast choices available in our traditional ' menu' that you can cook in a matter of minutes. You will realize that the convenience argument being made by marketers of modern breakfast falls flat.

**Myth #3: Superior nutritional profile:**

Instant food commercials talk about it being rich in **soluble fiber** that **reduces cholesterol and aids weight loss**. What remains unsaid is that the grains, pulses and millets that go into making our traditional breakfast are also a rich source of soluble fiber and can fulfill the same function too. Also, it is important to remember that excess fiber is not a great thing to have as it can interfere with the absorption of other important minerals like Zinc, iron and calcium in the body.

Apart from the optimum fiber content, coming together of grains and pulses that are rich in **B vitamins, minerals, amino acids** along with **essential fats** like *ghee*, home butter and the '*tadka*' of jeera, mustard etc. with **immunity boosting spices** like turmeric in fresh, home breakfasts makes your meal more wholesome and healthier. The better absorption and assimilation of these nutrients improves your digestion & the metabolism of your body, keeps blood sugar levels stable making you feel more energetic and lighter for the rest of the day. Though often riddled with fear & suspicion, *parathas* for breakfast will only make you successfully lose weight in a sensible and sustainable manner.

Let' take a close look and make a standard comparison (compared with 100g serving each):  
Artificial refreshment drink vs Natural refreshment drink

Glucon D		Sugarcane Juice	
Vitamin A	0 mg	Vitamin A	52.5 mg
Iron	0 mg	Iron	2.2 mg
Potassium	0 mg	Potassium	159.0 mg
Contains synthetic flavor		Natural flavor	
Contains artificial color		Natural color	

# Artificial Fat Burner vs Natural Fat Burner

Apple Cider Vinegar		Lemon	
Vitamin C	0 mg	Vitamin C	53 mg
Potassium	73 mg	Potassium	138 mg
Calcium	0 mg	Calcium	26 mg

Zucchini		Pumpkin	
Calcium	16 mg	Calcium	23 mg
Iron	0.73 mg	Iron	0.8 mg
Vitamin A	200 IU	Vitamin A	8513 IU
Vitamin E	0.12 mg	Vitamin E	1.06 mg
Price	200 / kg	Price	50 / kg

McDonald' s Burger + Fries		Whole Day Indian Meal 2 Aloo Paratha + Makki Roti & Saag + 1 Bowl Khichdi	
Calories	1101 kcal	Calories 348 + 325 + 175	848 Kcal

The popularity of imported and processed foods has led to the loss of our traditional food practices and has resulted in a decline in our overall health. In India, we cherish the idea of unity in diversity, the confluence of so many different cultures and languages to form the whole. Interestingly, this concept of diversity is equally important when it comes to diet and nutrition and their impact on the overall health and well-being of a person.

This is because of the role played by the bacteria (which number around 100 trillion) in the gut. **Modern nutrition science highlights the importance of diversity of good gut bacteria for a healthy body, which in fact thrives on the diversity of food that it is served.** Not to forget the gut-mind connection. We are blessed with an incomparable array of local dietary options that use **fresh ingredients** and can be cooked easily using 'ageless' recipes. It is high-time, we literally counted our 'diversity' blessings and started enjoying the immense variety that is waiting to be enjoyed.

It's time to reclaim our food heritage and incorporate healthy, organic Indian foods into our diet. By doing so, we not only support our local farmers and communities but also promote our own health and well-being. Let's Make a conscious effort to choose healthy and sustainable food options and make a positive change for ourselves and our future generations.



## SUCCESS... IF WE HAVE DECIDED

Everybody wants to be successful in their life. But while dreaming of success, one should not forget the battle which is necessary for victory.

"Life is beautiful when the art of living is understood, in this case. I would like to say. " Life is art, but a mountain of troubles. In Your troubles don't cry, you should only try and try, struggle hard and conquer the sky, with your skill and power of will, "

Proverbs like 'where there is a will, there is a way' are often used and experienced in our daily life. When someone wants to get something from his heart, he tries to get it with all his efforts and will-power. Nothing is impossible once you try hard. If the will-power is strong anything can be achieved. The heart gets broken when someone dreams for something and cannot achieve that thing, so sometimes he feels that life is a burden upon him. At some moments one should not lose one's power because will-power gives one enough strength and courage, so instead of weeping for the past, one should engage oneself in other activities.

Kiran Bedi in her book says, " If you want to achieve something, you must struggle, throw yourself in the valley of your aim. Do not think about the deepness and results of your task. When you will achieve your aim you will definitely forget about the struggle and pain. Nothing is impossible, if you try with the help of will power, you can achieve anything. If you are endowed with will power, nothing can block your journey to success. Be optimistic and struggle hard to achieve your goal. Never think whether you will be successful or not because when a mother takes care of her child, she never thinks whether the child will take care of her or not when he becomes a matured man, she goes on struggling and scarifying for him, thinking that he will become a good being. The main obstacle in the way of success is laziness and lack of will power.

Be active, ever green and optimistic.

Do not blame fate. Hope for the sky , you will learn to fly. After being successful in achieving your aims and ambitions, you have to become more or mere careful for victory. For being victorious, one has to struggle always and all the time. Do not stop. Because stopping means dying and struggling means, living. You can fulfill your dreams only when your will power is strong to fight and struggle. " To dream is your right, to struggle is your duty, will power is your need, to achieve the sky & to fly". Success demands hard work, struggle and sacrifice. Also struggle hard and be successful. Do not be afraid of failure because failure is the first stop on the way of success. learn to face problems. Bear your troubles.

Don,t worry and be happy.

Remember that " If you laugh, the whole world laugh with you, but if weep, you will have to weep alone ".

So cheer up, be optimistic be courageous. Make your will power strong. Be confident, hope for the bright future. Always think positively and do not totally depend on fate because you are the master of your fate.

And at last remember few lines of me, " May we reach, the goal we aim for, every challenge comes, as an opportunity, and each new day, a chance to build, a better future ".



**Mr. Vishal Gupta**  
Assistent Prof., Botany

# " The influence of a good teacher can never be erased"

Dear All

Education is the passport of our bright future and it is the founding stone of the country. Hence, ensuring the good quality of education for everyone leads to the social and economic growth of our country. Therefore, our education system should focus on producing not just engineers, but also teachers, scientists, entrepreneurs, artists, doctors, writers etc., all of whom are equally important in the development of our country. If today's students are educated in right manner surely, it would develop a healthy nation. Dear students, the quality is not achieved accidentally but it is the results of serious efforts and hard work and we are always committed to providing you good quality of education. We will always inspire you and try to increase your interest in the subject. Dear students, as you are science student so you have some curiosity, innovative thinking, and queries in your subject. The curiosity and queries will make you a master in your field. We believe that the laboratories are the major backbone of students and the science subject as well. Therefore, the Laboratory practical can develop the curiosity, thinking in the students and it plays a major role in the better learning and better understanding of the Zoology subject. Dear students, as we known that the process of learning is associated to our memory, one such molecule i.e., melatonin is associated with the process of learning and memory. This molecule has discovered in many years back and found in unicellular and multicellular animals including human. The primary biological function of melatonin was antioxidant defence to protect against toxic free radical damage in primitive unicellular organisms. During course of evolution, it adopted by multicellular organism and it modulates the learning and memory process in human as well as in animals. Hippocampus is a part of brain which is responsible for our memory power. Melatonin helps in strengthening of synapses between nerve cells of hippocampus (brain) to maintain the long-term memory retention. Melatonin is release from the pineal gland in the night only. Hence, it is called the hormones of darkness. It induces the sleep-in human. therefore, also known as sleep hormone. So, students you can improve the leaning and your memory power by taking proper sleep i.e., not less than 7-8 Hours per day. Dear Students, always believe in Yourself. You have immense potential to create wonders in your life! Wishing your the very best for all your upcoming endeavours!



**Dr. Jitendra Kumar**  
Assist. Prof., Zoology

**Best wishes to all !**



## आ जमीं पर यूँ गिरा

टूट कर जब एक तारा, आ जमीं पर यूँ गिरा  
चाँद भी तकता रह गया, जब टुकड़ों में यूँ बंटा।  
रात की गमगिन नजर भी, कुछ इस तरह असहाय थीं,  
प्रकाश की छाँव में खुद का कतरा-कतरा छिपा रही थीं॥

रात ने अपने आँचल को कुछ इस तरह फैलाया था,  
खेल रहे थे नन्हें तारे, प्रकृति यूँ मुस्करा रही थी।  
रात ने इन किलकारियों से कुछ यूँ फैलाये थे अपने केश  
मानों सुलझा रही थी वो, किसी के अनसुलझे जज्बातों के द्वेष॥

टूट कर जब एक तारा आ जमीं पर यूँ गिरा  
चाँद भी तकता रह गया जब टुकड़ों में यूँ बंटा।  
टूट कर जब एक तारा आ जमीं पर यूँ गिरा॥

## रात्रि

रात्रि कहते हैं हम उसे, जो छिपा रहा है रंग सारे  
रात्रि कहते हैं हम उसे जो दिखा रहा है हमें आईने।  
मृदुभाषी बनकर के यूँ ही सम्मोहित करता जा रहा,  
आकाश की तलहटी से मुस्कान विसरा रहा॥  
वक्त के इस पहिये में भाग अपना निभा रहा,  
रात्रि के अंधकार में खुद को समेटे जा रहा।  
रात्रि कहते हैं उसे, जो हर इक राज छिपा रहा,  
रात्रि कहते हैं, उसे जो छिपा रहा है रंग सारे॥  
चाँद की शीतल किरणों को मुस्कराना सिखा रहा,  
रात्रि कहते हैं इसे जो रंग सारे छिपा रहा।  
रात्रि कहते हैं उसे, जो दे रहा है भूमि को दिलासा,  
तप रही है वो, मगर धैर्य उसे सीखा रहा॥  
रात्रि कहते हैं उसे, जो रंग सारे छिपा रहा।



**श्रेया सिंह**  
एम.एससी., चतुर्थ सेम.

## संस्कार

अजीब विडंबना है हमारे देश की  
क्यों लड़कियों को ही करना पड़ता है  
पालन हर आदेश का  
क्या लड़कियाँ ही अपने मत्थे मढ़वा  
कर आई हैं, संस्कारों की हर गठरी।

अपने सपनों का गला घोटना पड़ता है।  
क्या उन्हें आजादी से जीने का कोई  
अधिकार नहीं,  
क्या उनके जीवन में खुशियों की कोई बहार नहीं  
क्यों सब लड़कियों को ही मान मर्यादा का पाठ पढ़ाते हैं?  
लड़कों को क्यों नहीं ये सब सिखाते हैं?  
वो भी तो घर के वंश हैं  
माता-पिता के अंश हैं।

उन्हें ही घर का चिराग कहा जाता है  
तो फिर लक्ष्मी का सम्मान करना क्यों नहीं सिखाया जाता है?  
और बाद में सिर्फ और सिर्फ हर दोष लड़की पर थोप दिया  
जाता है।

कैसी है यह लड़की जो अपने कुल का नाम डुबा आई  
न जाने जाकर, कहाँ गुल खिला आई।

लड़की पर उस समय जो बीता उसे समझ न पाया कोई भी  
वह जाकर अपने जीवन को मौत की शय्या पर स्वस्व लुटा  
आई।



**शिक्षा सिंह**  
बी.एससी. तृतीय सेम.

## कालेज के वो पाँच साल...

कभी-कभी जीवन की गाड़ी इतनी जेज सरसराहरों के साथ चलती है कि वक्त का पता ही नहीं चलता कुछ लगता है जैसे कल ही की तो बात है... ठीक ऐसे ही, जब ढेर सारे सपने मन में नयी उमंगे लिए हुए मैंने एक नई राह की तरफ अपने कदम बढ़ाये थे। हम सभी इस बात से बखूबी वाकिफ है कि जीवन एक यात्रा है और हम सभी ने सुना है कि यह एक छोटी यात्रा है। हर दिन को गिनें, हर पल की सराहना करें और इससे वह सब कुछ लें जो आप कर सकते हैं। जैसा कि कहावत सच में कहती है, यदि आप एक सुन्दर पेटिंग बनाना चाहते हैं, तो आपको एक कैनवास चाहिए। यदि आप सीढ़ियाँ चढ़ना चाहते हैं तो आपको सीढ़ियों की आवश्यकता होती है और यहाँ तक कि एक नदी को भी अपने गंतव्य को समृद्ध करने के लिए, सुचारु रूप से चलने के लिए एक ठोस तल की आवश्यकता होती है।



दिव्यता पाण्डेय

एम.एससी., चतुर्थ सेम, बॉटनी

इसी तरह यदि आप अपनी शैक्षणिक और पाठ्यतर गतिविधि को प्राप्त करना चाहते हैं, तो आपको न केवल माता-पिता से ठोस समर्थन की आवश्यकता है बल्कि एक ऐसे शिक्षण संस्थान की आवश्यकता होती है जो आपके लक्ष्य को पूरा करने का एक आयाम दे सके।

और यह सब मैंने अपने प्रतिष्ठित संस्थान में प्राप्त किया, "महात्मा गांधी पोस्ट ग्रेजुएट कालेज।"

जीवन सभी सकारात्मक ऊर्जा से भरा हुआ था और मैं अपने मंजिल के उन ढेर सारे सीढ़ियों के पहले पायदान पर चढ़ने को तैयार थी, जो कि 2018-2019 के शैक्षणिक वर्ष में शुरू हुआ।

मेरी कालेज यात्रा अगस्त, 2018 से शुरू हुई जो संघर्ष, एकजुटता, दोस्तों के साथ मस्ती और कई मैजिकल भावनाओं से भरी हुयी थी, जिसे आज मेरी सबसे अच्छी यादों के रूप में संजोया जा सकता है।

मेरे शिक्षा संघर्ष के चुनौतीपूर्ण 5 वर्ष जो मेरे जीवन का सबसे अच्छा प्रगतिशील वर्ष बन गया।

MGPG मेरे लिए मंदिर रहा है और मेरे शिक्षक वे थे जिन्होंने मुझे नए विचारों, अवधारणाओं, खोजों और ज्ञान की दुनिया से परिचित कराया, शायद यही वजह है कि वह हमेशा से ही मुझे उस कुम्हार की याद दिलाता है जो अपने बर्तन को सबसे अच्छा बनाता है। ठीक उस कुम्हार के भांति ही मेरे सारे शिक्षक जिन्होंने मुझे आने वाले कल को बेहतर ढंग से दुनिया का सामना करने के लिए सबसे अच्छे तरीके से ढाला है।

सीखना हमेशा से ही मेरी शिक्षा का एक हिस्सा रहा है, परन्तु एक अच्छा इंसान बनने के लिए मेरे कालेज और शिक्षकों द्वारा मुझे और भी बेहतर तरीके से विकसित किया गया है। कहा जाता है कुछ हासिल करने के लिए समय महत्वपूर्ण है, दिए गए समय में कुछ खास चीजे जो मैंने 2018-2022 की यात्रा में सीखी, जिसने मुझे "A BETTER ME" बनाया।

मैं आप सभी के साथ बहुमूल्य वर्षों के जुड़ाव के लिए ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ।

ऐसी अनमोल यादों के साथ कुछ वाक्य हमारे अन्तिम सेमेस्टर के लिए "मेरे यारों यह साथ का पल अब एक दास्तां में बदल रहा है, आ गया वो मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ रहा है।" क्लास, कैंटीन और लैब की मस्ती होगी खत्म, बच्चे ही थे ना जब आए थे, यह पल भी कैसे ढल गए। सेमेस्टर के एग्जाम, सैशनल सब कितनी जल्दी हो गए, एक पल में अरसा गुजरने का यह दौर भी अब थम रहा। आ गया वह मोड़ जिसमें अलविदा कहना पड़ रहा।



## मुहब्बत की शमा जलाएँगे

इंसान के नाते है जो, हम फर्ज निभाएँगे  
हर दिल में मुहब्बत की हम शमा जलाएँगे  
जो सुबह अगर जागे तो रात नहीं होती  
हो ख्वाब अगर कल के, तो आँख नहीं सोती  
हर हाल में हम सोई उम्मीद जगाएँगे...



शाम्भवी पाण्डेय  
एम.एससी., बॉटनी, चतुर्थ सेम.

ये खून बहाकर, तू जन्नत नहीं जाएगा  
तू आग ये नफरत की, यूँ फैला नहीं जाएगा  
हम आब-ए-कल्ब से, हर आग बुझाएँगे...  
हर दिल में मुहब्बत की हम शमा जलाएँगे....

अब दैर-ओ- हरम की भी, हमको ना जरूरत हो  
हो प्यार खुदा अपना और प्यार ही इबादत हो  
हम प्यार के सजदे में सिर अपना झुकाएँगे  
हर दिल में मुहब्बत की हम शमा जलाएँगे...

## प्रिया मिश्रा

बी.एससी., द्वितीय सेम.

करो दिल से सजदा तो इबादत बनेंगी,  
माता-पिता की सेवा ही अमानत बनेंगी।  
खुलेगा जब तुम्हारी गुनाहों का खाता,  
तो ये सेवा ही तुम्हारी जमानत बनेंगी।।

जमाने तुम्हारे साथ क्यूँ न होने लगे रूखसत,  
सुना था आदमी मरता है, तो दुनिया नहीं मरती,  
बच्चों से किसी बात पर नाराज हो लेकिन,  
माँ कभी दुआ में बददुआ नहीं करती।।



## मुश्किलों से ना डर...

मुश्किलों से ना डर, अभी मंजिल की तलाश है।  
तू कर भरोसा खुद पर, तेरा खुदा तेरे पास है।।  
रख यकीं किस्मत पर अपनी, क्योँ तू यूँ निराश है।।  
करेगा इक दिन फतेह, अगर जीतने की आस है।।

मुश्किलों से ना डर, ...  
राहों की इन ठोकरोँ से, तू क्योँ भला उदास है।  
रोशन करना खुद को, तो जलकर ही उजास है।।

मुश्किलों से ना डर, ...  
दुनिया के सुन झूठे ताने, तू होता क्योँ निराश है।  
दुनिया भी झुकेगी फिर, जब बुलंदी तेरे पास है।।

मुश्किलों से ना डर, अभी मंजिल की तलाश है।  
तू कर भरोसा खुद पर, तेरा खुदा तेरे पास है।।

# THE INCREDIBLE WORLD OF PLANTS: A BOTANY STUDENT'S PERSPECTIVE

As a botany student, I have always been intrigued by the world of plants and secrets they hold. From the smallest of the seed to towering trees each plant has its own unique story to tell.

From delicate ferns to vibrant flowering shrubs each plant seems to have its own personality and character. One of my favorite experience as a botany student is taking field trips to local garden and parks. walking among the plants and observing them in their natural habitat is truly awe-inspiring. I remember one particular trip from our college to Ramapithecus park in Nepal, where I felt the sense of wonder and appreciation for the beauty of nature that I have never felt before.

Learning about the intricate relationships between plants and other organisms such as pollinators and mycorrhizal fungi has given me a new appreciation of all life on earth. Each plant holds a special place in my heart and it is my hope that this article has inspired you as well to take a closer look at the world of plants and discover the secrets they hold.



**Shree Nidhi Singh**  
M.Sc. (Botany) 2<sup>nd</sup> Sem.

## गुरु की महिमा

गुरु चरण में स्वर्ग बसे हैं  
गुरु शरण हैं धाम हमारे  
गुरु आशीष जांकू मिल जाए  
जन्म जन्म के भाग सुधारे।

गुरु आदेश मस्तक धर रखो  
गुरु सेवा में रैन-दिन जागो  
मुख से गुरु शिक्षा गायन हो  
गुरु की आज्ञा का पालन हो।

मैं करूँ चरण धूलि को धारण  
चरणों का अमृत पान करूँ  
शीश झुका के सहज भाव से  
उनके चरणों को प्रणाम करूँ।



**अंजली मद्धेशिया**  
बी.एससी., द्वितीय सेम.

गुरु के कर सर पर जाएँ  
मैं भवसागर पर जाऊँ  
वंदन करो गुरु की दिव्यता  
मैं कठिन परीक्षा पार जाऊँ।

गुरुवाणी को निज दोहराऊँ  
गुरु की महिमा नित नित गाऊँ  
मोहे मिले चाकरी गुरु सेवा की  
गुरु को पूज के मैं तर जाऊँ।

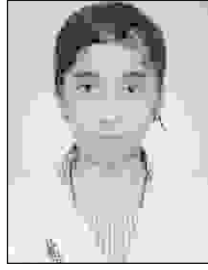


## भारत देश महान

श्री कृष्ण राम गुरू नानक का  
यह भारत देश महान रहेगा।  
वेद शास्त्र गीता रामायण  
गुरू ग्रन्थ साहिबा का ज्ञान रहेगा  
कुरान बाइबल और हर धर्म का  
भारत में ऊँचा सम्मान रहेगा॥

भारत का इतिहास गवाह  
जब इस पर विपदा आई है।  
मानवता दुश्मन शैतान ने  
जब-जब धूम मचाई है।  
भारत के वीरों से दुश्मन ने  
जब-जब मुह की खाई है।  
देश की एकता अखंडता प्रथम है,  
बात समझ में आई है।

जब-जब धर्म की हानि हुई है  
कुदरत ने करिश्मा दिखलाई है।  
भूले-भटके मानवता को  
सजा सबक सिखलाई है।  
प्यार की दुनिया रंग रंगीली  
इसका नशा निराला है।  
हर इंसान की शुभइच्छा का  
सृष्टि में उजाला है।



**नाम- उन्नति रावत**  
बी.एस.सी., ( गणित )  
द्वितीय सेमेस्टर

## सत्य की बात

जिस दिन मेरा मन है करता  
देश प्रेम की बात सुनाऊं  
देवों की इस पावन धरा पर  
मधुर गीत आज मैं गाऊं।

महापुरुष हुए हैं इतने  
नील गगन में तारे जितने  
उनको हर पल शीश झुकाऊं  
मधुर गीत आज मैं गाऊं।

धर्म ज्ञान और सत्य की लय है  
सूर्य की तरह तेजमय है।  
सच बात है आज बताऊं  
मधुर गीत आज मैं गाऊं।

वीरों की धरती नमन मैं करती  
धूल को तेरे माथे पर धरती।  
हर युग में तेरी वीर कहलाऊं  
मधुर गीत आज मैं गाऊं।

## If you want to...

If you want to fight  
Fight for your Motherland  
You want to built  
Built your character.  
If you want to kill,  
Kill yours selfishness.  
If you want to see  
see beauty and goodness in others  
If you want to live,  
Live with your friendship.  
If you want to die,  
Die for truth.  
  
If you want to win,  
win the want to other.  
If you want to laugh,  
laugh at your foolishness.

**Roli Tiwari**

B.Sc. 1<sup>st</sup> Year (Isem.)  
Electronics



## नारी शक्ति

मैं लड़की हूँ कमजोर नहीं  
मुझपे तेरा कोई जोर नहीं  
जो जी आये करती हूँ  
हसती गाती मचलती हूँ।

शौक बड़े अरमान तेरे  
अरमानों पर डाला ताला है  
पुरूष समाज तेरा क्या कहना  
सब तेरा सुनने वाला है।

अग्नि परीक्षा सीता दे  
द्रौपदी का तुम अपमान करो  
निर्भया को तुमने नोचा था  
मुझे भी तुम शर्मसार करो।

समाज तेरा तो क्या कहना  
तेरी सोच बहुत अनोखी है  
क्या खाक देखी तुमने दुनिया  
जो बेटी की उड़ान नहीं देखी है।

नुक्कड़ पर बैठे तुम ताने दो  
छेड़ने के नये बहाने दो  
तेजाब लिए तुम पास खड़े  
मैं चीखती हूँ मुझे जाने दो।

ये भीड़ नहीं कठपुतली है  
जो मौन पड़े चुपचाप खड़े  
तेरे सोच का क्या कहना  
ये सोच बहुत पुरानी है  
बदलते भारत की नारी हम  
लिखने आयी नई कहानी हैं।



**नम्रता वर्मा**  
बी.एससी. ( गणित )  
द्वितीय सेमेस्टर

## आंसू

आंसू है या पानी है, राजा है या रानी है,  
आंसू है या सागर है, संवेगों का गागर है,  
आंसू जैसे मोती है, दीपक तले ज्योति है,  
एक शिशु की आंख में आंसू, मां की  
याद दिलाता है,  
एक दुल्हन की आंख में आंसू, बाबुल  
को दर्शाता है,  
एक मृतक के पास में आंसू, दुनिया की रीति बताता है,  
आंसू तब भी आता है, जब खुशियों का सावन आता है,  
आंसू तब भी आता है, जब-जब मिलन उकसाता है,  
सच्चा होता है आंसू, झूठा भी होता है आंसू,  
गंगाजल सा जब बन जाए, नजरो को पावन कर देता,  
आंसू एक कहानी है, जो सुननी और सुनानी है,  
जो सुननी और सुनानी है.....॥



**अनुप्रिया तिवारी**  
एम.एससी., बॉटनी

## कड़वा सच...

मजबूती की झंकार,  
थिरकतीं जिसके मन में,  
स्वस्थ रूपी पेड़,  
पनपे उसके तन में,  
पहनकर आलस का चोला  
जो आगे बढ़ता है।  
दूसरों का देख विजय,  
जो बस हाथ ही मलता है।  
छोटा सा है जीवन,  
इसमें कुछ काम बड़ा तू कर जा।  
पूजा से कहीं अधिक बड़ा है,  
अच्छे कर्मों का दर्जा!



**प्रतीक्षा शर्मा**  
बी.काम. तृतीय वर्ष

## जिंदगी तेरी है, तू लड़ कर जीत भी जायेगा...

जिंदगी तेरी है, तू लड़ कर जीत भी जायेगा....  
जिंदगी है तो कई चुनौतियां भी आयेंगी,  
तू सामना कर डटकर, कठिनाइयाँ भी आयेंगी,  
यूं तो आसान नहीं है, जिंदगी का जीना,  
तू जिंदगी को नहीं, जिंदगी तुझको समझायेगी...



**सत्येन्द्र सोनकर**  
बी.एस.सी. प्रथम वर्ष

रख हौसला तू बिखर कर भी निखर जायेगा,  
जिंदगी तेरी है, तू लड़ कर जीत भी जायेगा...

काई साथ खड़ा रहे न रहे, तू खुद पर बस विश्वास रखना,  
तू फिक्र छोड़ दे दुनिया की, तू खुद पर बस आस रखना,  
गिरोगे हजारो दफा तुम, सफलता की राहों पर,  
उठ-उठ कर चलना है उन राहों पर, बस इतना तुम याद रखना...

इन मुश्किलों से लड़ कर तू, जिंदगी जीना सीख जायेगा,  
जिंदगी तेरी है, तू लड़ कर, जीत भी जायेगा....

## परीक्षा

शोर भरी शाम,  
घड़ी बदलती जाती है,  
अज्ञात का दरवाजा,  
परीक्षा के सामने खुल जाता है।

कलम उठाकर शब्दों की उंगलियों से,  
परीक्षा की लड़ाई लड़ने निकल जाते हैं,  
जीत हो या हार,  
पर लड़ाई जारी रहती है।

सफलता का मधुर स्वाद चखने के लिए,  
अच्छी तरह से तैयारी की जाती है,  
जिससे सफलता बन जाती है अपनी थैली,  
और परीक्षा देते हुए जिंदगी का रस चखा जाता है।



**लक्ष्मी चौधरी**  
बी.एससी.,द्वितीय सेमेस्टर

आज ये परीक्षा है,  
कल दूसरी हो जाएगी,  
पर जीवन की हर चुनौती का सामना,  
परीक्षा से होता है जब संघर्ष जीता जाता है।

## बेरोजगार युवा

सारे विषयों को मस्तिष्क में रखकर  
युवा घूमता फिरता है।  
लेकिन भारत में पढ़ने- लिखने की  
कदर न कोई करता है।

आइन्सटीन का नियम याद है,  
नियम याद है न्यूटन का  
पर अनपढ़ नेताओं को  
क्या मोल पता है इस जन का।

सरकारें अपना पेट भरें  
जनता बेरोजगार है।  
बीच नदी में अटकी नौका  
बड़ी विकट यह धार है

उदर बड़ा है इनका इतना  
धन दौलत सब पचता है  
इतना खाते हैं पर  
जनता के लिए नहीं कुछ बचता है।

जिस दिन गुस्सा हुआ युवा ये,  
सरकारों को खा जाएगा,  
सदनों में जाकर बोलेगा,  
तब चैन देश को आएगा।

नाराज हुआ ये जब तुमसे  
आँखें जब इनकी लाल हुईं  
समझो हिल गया हिमालय है  
दुगुनी धरती की चाल हुई।

**मधुर श्रीवास्तव**  
बी.एससी., प्रथम वर्ष

## सुकून-ए-जिन्दगी

रूई का गद्दा बेच कर... मैंने इक दरी खरीद ली,  
ख्वाहिशों को कुछ कम किया मैंने और खुशी खरीद ली....

सबने खरीदा सोना... मैंने इक सुई खरीद ली,  
सपनों को बुनने जितनी डोरी खरीद ली...

मेरी एक ख्वाहिश मुझसे इस जमाने ने खरीद ली,  
फिर उनकी हंसी से मैंने अपनी कुछ और खुशी खरीद ली...

इस जमाने से सौदा कर... एक जिन्दगी खरीद ली...  
दिनों को बेचा और शामें खरीद ली...

शौक -ए- जिन्दगी कमतर से और कुछ कम किये,  
फिर सस्ते में ही सुकून - ए - जिन्दगी खरीद ली।

फिर सोचती हूँ मैं अक्सर क्या यही जिन्दगी है  
सब कुछ तो है पास पर कुछ भी नहीं है।

कहने को तो सारी दुनिया ही अपनी है,  
पर इस दुनिया में अपना कोई भी नहीं है।

**विजयलक्ष्मी प्रजापति**  
बी.काम., प्रथम वर्ष

## जीवन की गाथा

ये जिन्दगी चार दिन की, जीकर हमें दिखाना है,  
प्यार, माता, स्नेह को हमको, एक साथ अपनाना है,  
इंसानियत से प्रेरित हो रिश्ता, उसको हमें निभाना है,  
जहाँ सबकी मर्जी चले, ऐसा संसार सजाना है,  
सच्चे कर्मों से जितना ही हो, उतना ही कुछ कमाना है,  
एक क्षण में जिन्दगी की मजा हमें जी जाना है।



**अभिषेक कुमार दूबे**  
बी.एससी., द्वितीय सेमेस्टर

एक के दुख को दूसरा समझे, ऐसी भावना हमें जगाना है,  
सर्वे भवन्तु सुखिनः का नारा, घर-घर तक पहुँचाना है,  
ईंट, पत्थर की बजाय हमको, प्रेम से घर बनाना है,  
सुख, शांति समृद्धि से सुसज्जित, माहौल हमें अपनाना है,  
भ्रष्टाचार मुक्त समाज हो, कानून कुछ ऐसा लाना है,  
आशा की दीप जिसमें प्रज्ज्वलित हो, ऐसी मसाल जलाना है,  
ये जिन्दगी चार दिन की, जीकर हमें दिखाना है।

भाइचारे से खिला हुआ हो, कुछ ऐसा फूल लगाना है,  
एकता का सूत्र पिरोकर, उसकी ताकत सबको समझाना है,  
कर्तव्यों के बुनियादों पर, आगे बढ़ते जाना है,  
संकल्पों के मार्ग पे चलके, जीवन को सफल बनाना है,  
इस जीवन की वर्णन गाथा, सबको हमें सुनाना है,  
अपनी अमिट छाप छोड़के ही, इस दुनिया से जाना है,  
ये जिन्दगी चार दिन की, जीकर हमें दिखाना है।

## BOTANY'S STUDENT

The botany students are a curious bunch,  
They love to study plants and all their lunch,  
they know the difference between a shrub and a tree,  
and they can spot a flower from a mile, you'll see.

Their books are full of scientific names,  
of all the plants that grow in fields and lanes,  
and they can rattle off facts and figures with ease,  
About the structure, growth, and ecology of these.

They have a unique sense of humor, you know,  
And love to laugh at plant jokes and all their show,  
Like why did the tomato turn red ? Because it saw the salad dressing!

Or what do you call a plant that's always on time? A-punctual, we're guessing!

O But sometimes they get lost in their world of green,  
And start talking to plants, like they's re part of a team,  
They'll tell them their secrets, hopes, and dreams,  
And the plants just nod, it seems.

So if you're ever feeling down, just find a botany student,  
And they'll cheer you up with their plant jokes, you bet,  
And who knows, they might even take you on a field trip,  
To explore the beauty of nature, and all of its botanical flips!



**Savita Maurya**  
M.Sc. (Botany) 2<sup>nd</sup> Sem.



## Phone is a disease for Today's Youth

Like today's youth using the phone has become a kind of disease. Because he is not driving the phone, phone is driving him. Today's youth are not able to live without the phone even for a moment. The thinking capacity of phone youth is being reduced day by day. The phone is slowly affecting the health of the youth as well, taking them on wrong path.



The phone is also taking the youth away from their family and friends. Today boys and girls use phone mostly for watching sexual videos and for doing wrong things. Today boys and girl mostly talk on social media only, they are not able to talk face to face, their ability to talk is also decreasing by phone. 70% boys and girls all over the world use phone for sex videos and wrong doings. So we get a lesson that we should use the phone but should do only as much as it is needed. We should use the phone, we should not be used by the phone.

### Thought



**Ariba Sageer**  
B. Com. III

" Success is not always a result of hard work, sometimes its more about how enthusiastic you are for that successful phase of your life."

Inspites of being everyone's favorite  
Try to be the person you always want to be.

If you need to be alone, be alone  
& find out your won worth,  
your own journey to be yourself.

### सपने...



**सेजल त्रिपाठी**  
बी.काम., तृतीय वर्ष

हर किसी को नहीं आते  
बेजान बारूद के कणों में  
सोई आग के सपने नहीं आते।  
बदी के लिए उठी हुई  
हथेली को पसीने नहीं आते  
शेल्फों में पड़े  
इतिहास के ग्रंथो को सपने नहीं आते।  
सपनों के लिए लाजमी है  
झेलनेवाले दिलों का होना  
नींद की नज़र होनी लाजमी है  
सपने इसलिए हर  
किसी को नहीं आते।



## Poem



**Sakshi Rai**  
B.Com. 3<sup>rd</sup> year

Life is something  
we all share,  
Just like oxygen in  
the air.  
The way we live it,  
is up to us,  
With a negative or  
with a plus.

Life is something we should cherish,  
We never know when we'll perish.  
Live each and every single day,  
Smell the flowers, stop and play.

Life is something we've been blessed,  
Choice is yours, choose your quest.  
Follow your passions, and you'll be  
fine,  
With the right attitude, you will  
shine.

## माँ...



**शिवांगी सिंह**  
बी.काम. तृतीय वर्ष

गिरती हूँ तो, हाथ देकर संभाल लेती है  
रोती हूँ तो, अपने आँचल से आँसू पोछ देती है  
मुझे बनाने में सबसे ज्यादा अंश है जिसका  
वो है मेरी माँ...  
दोस्त की कमी पूरी करती है  
मेरी तरक्की देख इतराती है  
रहती है परेशान फिर भी मुस्कुराती है  
बस तभी मेरा हौसला बन जाती है  
वो है मेरी माँ...  
पापा के हर सवाल का जवाब है  
पापा की डाँट पर मरहम है  
उदास हो जाऊँ, तो मेरी मुस्कान है  
वो है मेरी माँ...  
और क्या बोलूँ  
इस दुनिया में सबसे अनमोल है, माँ...

## वजूद (अस्तित्व)

खो रहे हैं हमने खुद की पहचान,  
पाने के लिए इस जग में एक नया नाम  
करते हैं हम गैरों की नकल  
चाहे वह हो चेतन या अचेतन की शकल  
लिबास पहन के गैरों का हम खुद को मॉडर्न कहते हैं,  
बल्कि अपनी संस्कृति को भुलाकर के हम खुद के  
वजूद को ही खोते बैठे हैं।

किसने कहा अपनी एक पहचान के  
लिए नकल करना जरूरी है,  
गैरों के तरीके अपनाके अपने अस्तित्व  
को खोना जरूरी है।

क्यों न पहचान बनाओ इस तरह  
अस्तित्व का दामन न छोटे जिस तरह।  
सभी ने न खो दिया था अपना वजूद अपनी मुकाम की निगाहो में  
जब सबने अपने वजूद के साथ एक अजीम मुकाम को पाया है।  
तो हम क्यों माडर्निटी के नाम पे अपने पहचान व  
अस्तित्व को गंवा रहे हैं?  
क्या हम खुद को ही खोकर, खुद को हासिल कर पायेंगे?  
गैरों की नकल करके एक नई पहचान बना पायेंगे?



**रफत बानो**  
बी.एससी., तृतीय सेम.

## ना जाने क्या खोज रहा हूँ

ना जाने क्या खोज रहा हूँ  
ना जाने क्या सोच रहा हूँ,  
ये मेरे मन की न जाने कौन सी ये बातें हैं,  
जो मेरे मन को समझ ना आ पाती।

लोगों से घिरा हुआ हूँ  
लेकिन अपने नजर नहीं आते,  
इन मुस्कुराते चेहरों के पीछे  
ना जाने कौन क्या छिपा रहा है।

ये मेरे मन की न जाने कौन सी ये बातें हैं,  
जो मेरे मन को समझ ना आ पाती।  
ना जाने क्या खोज रहा हूँ,  
ना जाने क्या सोच रहा हूँ।

## चलो वादा करते हैं...

चलो वादा करते हैं,  
कि अब जब हम बाहर आएँगे,  
भेद-भाव के अँधेरे में,  
समता के दिये जलाएँगे।  
है धर्म, जाति और अत्याचारों की,  
जिन आँखों ने पट्टी बाँधी,  
एकता के उजियारे में,  
फिर से उनको लाएँगे,  
चलो वादा करते हैं।

नारी की मर्यादा की सीमा  
जब-जब इस समाज ने लाँधी,  
तब चाहे हो युग त्रेता या द्वापर,  
तब-तब उठी है  
एक विध्वंस की आँधी।  
अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं,  
अगर उस शक्ति की इस चेतावनी को,  
हम समझ जाएँगे  
चाहे नर हो या नारी,  
सबका मान उन्हें लौटाएँगे,  
सम्मान उन्हें लौटाएँगे,  
चलो वादा करते हैं।

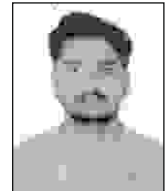
## आखिर क्या बनना चाहता हूँ मैं

कभी किसी की आँखों का तारा,  
कभी आवारा बनना चाहता हूँ मैं।  
कभी अमीरों से भी अमीर,  
कभी फकीर बंजारा बनना चाहता हूँ मैं,  
आखिर क्या बनना चाहता हूँ मैं ?

कभी नौकरी पेशा हाई परफार्मर  
कभी अपना खुद मालिक बनना चाहता हूँ मैं।  
कभी अफसर सिविल सर्विसेज का,  
कभी अदीब बनना चाहता हूँ मैं,  
आखिर क्या बनना चाहता हूँ मैं ?  
कभी अलग सबसे हटकर ही,

कभी सब जैसा बनना चाहता हूँ मैं,  
कभी कोई ब्राह्मण विज्ञानी,  
कभी शराबी बनना चाहता हूँ मैं,  
आखिर क्या बनना चाहता हूँ मैं?

कभी जल्दी सुबह उठने वाला,  
कभी निशाचर बनना चाहता हूँ मैं।  
कभी जीवन का पूरा रस लेकर जीना,  
कभी हर पल मरना चाहता हूँ मैं,  
आखिर क्या बनना चाहता हूँ मैं?



आयुष श्रीवास्तव

बी.काम., तृतीय वर्ष

## ई-गवर्नेस क्या है ?

ई-गवर्नेस का मतलब सभी सरकारी कार्यों को ऑनलाइन सर्विस के माध्यम से जनता तक आसानी से पहुँचाना जिससे सरकारी कार्यालयों और जनता दोनों के पैसे और समय की बचत हो सके और बार-बार आपको विभिन्न दफ्तरों के चक्कर न लगाना पड़े। सीधे शब्दों में कहें तो ई-गवर्नेस के तहत सभी सरकारी कामकाजों को ऑनलाइन कर दिया गया है जिससे जनता घर बैठे विभिन्न कार्यों के लिए ऑनलाइन ही अप्लाई कर सके।



**प्रिन्स पाण्डेय**  
बी.काम. तृतीय वर्ष

सरकार की आम नागरिकों के लिए उपलब्ध सुविधाओं को इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध कराना ई-गवर्नेस या ई-शासन कहलाता है। इसके अंतर्गत शासकीय सेवाएँ और सूचनाएँ आनलाइन उपलब्ध होती हैं। भारत सरकार ने इलेक्ट्रॉनिक विभाग की स्थापना 1970 में की और 1977 में नेशनल इंफॉर्मेटिक्स सेन्टर की स्थापना ई-शासन की दिशा में पहला कदम था।

आज भारत सरकार और लगभग सभी प्रमुख हिन्दी भाषी राज्यों की सरकारें आम जनता के लिए अपनी सुविधाएँ इंटरनेट के माध्यम से उपलब्ध करा रही हैं। विद्यालय में दाखिला हो, बिल भरना हो या आय-जाति का प्रमाण पत्र बनवाना हो, सभी मूलभूत सुविधाएँ हिन्दी में उपलब्ध हैं।

इस दिशा में अभी शुरूआत ही हुई है तथा माना जा रहा है कि आने वाले समय में सभी मूलभूत सरकारी सुविधाएँ कम्प्यूटर तथा मोबाईल के माध्यम से मिलने लगेंगी जिससे समय, धन तथा श्रम की बचत होगी तथा देश के विकास में योगदान मिलेगा।

### ई-गवर्नेस के अंतर्गत आने वाले कार्य

- ◆ आप ऑनलाइन बैंकिंग के जरिये सभी बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठा सकते हैं।
  - ◆ जी.एस.टी. से सम्बन्धित सभी कार्य ऑनलाइन ही कर सकते हैं।
  - ◆ बिजली, पानी, टेलीफोन, मोबाईल, डी.टी.एच. इत्यादि के बिल आनलाइन भरे जा सकते हैं।
  - ◆ पैन कार्ड, आधार कार्ड, राशन कार्ड, पासपोर्ट, जाति प्रमाण-पत्र का सत्यापन।
- आयकर रिटर्न फाइलिंग के सभी कार्य आनलाइन किये जा सकते हैं। ट्रेन, बस और हवाई जहाज की टिकट ऑनलाइन बुक कर सकते हैं।

**1. G2G (Government to Government):**— जी 2 जी यानी सरकार से सरकार, जब सूचना और सेवाओं का आदान-प्रदान सरकार की परिधि में होता है, इसे जी 2 जी इंटरैक्शन कहा जाता है। यह विभिन्न सरकारी संस्थाओं के बीच और इकाई के विभिन्न स्तरों के बीच कार्य करता है।

**2. G2C (Government to Citizen):**—जी 2 सी यानी सरकार से नागरिक, यह सरकार और आम जनता के बीच बातचीत को जी 2 सी कहते हैं।

यहाँ एक प्रक्रिया सरकार और नागरिकों के बीच स्थापित की गई है, जिससे नागरिक विभिन्न प्रकार की सार्वजनिक सेवाओं तक पहुँच सकते हैं। नागरिकों को किसी भी समय, कहीं भी सरकारी नीतियों पर अपने विचारों और शिकायतों को साझा करने की स्वतंत्रता है।

**3. G2B (Government to Business):**—जी 2बी यानी सरकार से व्यवसाय, इसमें ई-गवर्नेस बिजनेस क्लास को सरकार के साथ सहज तरीके से बातचीत करने में मदद करता है। इसका उद्देश्य व्यापार के माहौल में और सरकार के साथ बातचीत करते समय पारदर्शिता स्थापित करना है।

**2. G2C (Government to Employees):**—जी 2 ई यानी सरकार से कर्मचारी, किसी भी देश की सरकार सबसे

बड़ी नियोक्ता है, और इसलिए वह नियमित आधार पर कर्मचारियों के साथ काम करती है, यह सरकार और कर्मचारियों के बीच कुशलता और तेजी से संपर्क बनाने में मदद करता है, साथ ही उनके संतुष्टि स्तर तक पहुँचाने में मदद करता है।

### **ई-गवर्नेंस के चरण**

विभिन्न शोध अध्ययनों में यह स्पष्ट है कि ई-गवर्नेंस मौलिक रूप से कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, कम्प्यूटर और संचार प्रणालियों की नेटवर्किंग के विकास से जुड़ा हुआ है। भारत में ई-गवर्नेंस की शुरुआत चार चरणों में हुई।

**1. कम्प्यूटरीकरण (Computerization):** पहले चरण में, व्यक्तिगत कम्प्यूटर की उपलब्धता के साथ सभी सरकारी कार्यालय में पर्सनल कम्प्यूटर स्थापित किये गये। कम्प्यूटर का उपयोग वर्ड प्रोसेसिंग के साथ शुरू हुआ, इसके बाद डेटा प्रोसेसिंग में तेजी आई।

**2. नेटवर्किंग (Networking):** इस चरण में, कुछ सरकारी संगठनों की कुछ इकाइयों को विभिन्न सरकारी संस्थाओं के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान और डेटा के प्रवाह के लिए एक हब के माध्यम से जोड़ा गया।

**3. ऑन-लाइन उपस्थिति (Online presence) :** तीसरे चरण में, इंटरनेट कनेक्टिविटी बढ़ने के साथ, वेब पर उपस्थिति बनाए रखने के लिए एक आवश्यकता महसूस की गई। इसके परिणाम स्वरूप सरकारी विभागों और अन्य संस्थाओं द्वारा वेबसाइटों का रखरखाव किया गया। आम तौर पर, इन वेब-साइटों में संगठनात्मक संरचना, संपर्क विवरण, रिपोर्ट और प्रकाशन, संबंधित सरकारी संस्थाओं के उद्देश्य और दृष्टि विवरण के बारे में जानकारी होती थी।

**4. ऑन-लाइन अन्तर्क्रियाशीलता (Online interactivity) :** ऑन-लाइन उपस्थिति का एक स्वाभाविक महत्व सरकारी संस्थाओं और नागरिकों, नागरिक समाज संगठनों आदि के बीच संचार चैनलों का खोला जाना था। इस चरण का मुख्य उद्देश्य डाउनलोड करने योग्य फॉर्म प्रदान करके सरकारी संस्थाओं के साथ व्यक्तिगत इंटरफेस के दायरे को कम करना था।

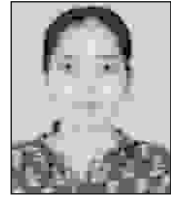
### **ई-गवर्नेंस के लाभ**

- ◆ ई-गवर्नेंस शासन में सुधार है जो सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के संसाधन उपयोग द्वारा सक्षम हैं।
- ◆ ई-गवर्नेंस सभी नागरिकों के लिए सूचना और उत्कृष्ट सेवाओं की बेहतर पहुंच बनाता है।
- ◆ यह सरकार में सरलता, दक्षता और जवाबदेही भी लाता है। आईसीटी के उपयोग के माध्यम से शासन को व्यापक व्यापार प्रक्रिया के साथ संयुक्त रूप से पुनर्व्यवस्थित करने से जटिल प्रक्रियाओं का सरलीकरण, संरचनाओं में सरलीकरण और विधियों एवं नियमों में बदलाव होगा।
- ◆ ई-गवर्नेंस नागरिकों और सरकार के लिए लाभप्रद है क्योंकि संचार प्रौद्योगिकी का तेजी से विकास हो रहा है और शासन में इसे अपनाने से सरकारी मशीनरी को नागरिकों के घर-द्वार तक पहुँचाने में मदद मिलेगी।

## युवा पीढ़ी से आह्वान

नए युग का सृजन युवकों! तुम्हारे हाथ में है,  
समूचा जग, युवा पीढ़ी! तुम्हारे साथ में है।  
हे भारत के युवा जगो एहसास कराओ होने का  
गीता का तुम ज्ञान रखो और जिगर दिखाओ सीने का।  
तुम्हारे रक्त में अविरल रवानी है युवाओं!  
तुम्हारे शौर्य की अनुपम कहानी है, युवाओं!  
नए युग के नए निर्माण की दृढ़ नींव हो तुम!  
कि युगऋषि के तुम्ही हनुमान हो, सुग्रीव हो तुम।  
प्रबल फौलाद, सब मानो, तुम्हारे गात में है,  
नए युग का सृजन युवकों तुम्हारे हाथ में है

भारत की सबसे प्रबल शक्ति हो जो चाहो कर जाओगे,  
संस्कार में जीना सीखो राम स्वयं बन जाओगे।  
करो सामर्थ्य का उपयोग मानव के लिए तुम,  
कहे इतिहास नारी की सुरक्षा को जिए तुम,  
उठो उसको पुनः खोया हुआ सम्मान दे दो,  
पतन की ओर उन्मुख दृष्टि को उत्थान दे दो।  
आज विदेशी भारत आकर हरे कृष्ण को गाते हैं  
कई देश शिक्षा में अपने गीता ज्ञान पढ़ाते हैं  
लेकिन हमको समय नहीं है हम व्हाटसेप के दीवाने हैं  
अब दोहा गाने वालों के घर भी बजते गाने हैं  
चलोगे जिस दिशा में तुम उधर दुनिया बढ़ेगी,  
तुम्हारी आस्था ही तो नया साँचा गढ़ेगी,  
तुम्हारे आचरण का अनुकरण होगा धरा पर  
सृजित इससे नया वातावरण होगा धरा पर  
नया युग सत्यप्रयासों के सहज अनुपात में है,  
नए युग का सृजन, युवकों तुम्हारे हाथ में है।



**श्रेया त्रिपाठी**  
बी.एससी. (बायो) तृतीय सेम.





# महाविद्यालय परिवार

## डॉ. अनिल कुमार सिंह- प्राचार्य

### विज्ञान संकाय

#### वनस्पति विज्ञान विभाग:

1. डॉ. अवनीश

2. डॉ. अनीता कुमारी

3. डॉ. आलोक रंजन

4. श्री विशाल कुमार गुप्ता

5. डॉ. क्षमता श्रीवास्तव

6. डॉ. श्वेताम्बरा श्रीवास्तव

7. डॉ. मधुलिका श्रीवास्तव

8. डॉ. मन्जुला श्रीवास्तव

9. डॉ. गौरव श्रीवास्तव

#### रसायन विज्ञान विभाग:

1. डॉ. आलोक कुमार श्रीवास्तव

2. डॉ. संगीता श्रीवास्तव

3. डॉ. शैलेश वर्मा

4. डॉ. चन्द्र प्रकाश सिंह

5. श्री विकास कुमार सिंह

6. श्री रणधीर कुमार

7. डॉ. मनोज कुमार श्री0

8. डॉ. अल्पना त्रिपाठी

9. डॉ. संजय सिंह

10. डॉ. शरद गुप्ता

#### औद्योगिक रसायन:

1. डॉ. रविन्द्र कुमार शुक्ला

#### गणित विभाग:

1. डॉ. उमेश कुमार गुप्त

2. डॉ. आर.एन. शुक्ला

3. डॉ. बृजेश कुमार गुप्ता

4. डॉ. अमित राय

5. डॉ. अजय कुमार

प्रोफेसर

( विभाग प्रभारी )

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

प्रोफेसर

( विभाग प्रभारी )

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

एसोसिएट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

प्रोफेसर

( विभाग प्रभारी )

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

6. डॉ. आर. एन. यादव

7. डॉ. आकाश पाण्डेय

#### भौतिक विज्ञान विभाग:

1. डॉ. शैलेन्द्र कुमार श्री

2. डॉ. अमर नाथ ठाकुर

3. डॉ. ए. एन. मिश्रा

4. डॉ. एस. पी. दूबे

5. डॉ. संजय यादव

6. डॉ. आर. पी. त्रिपाठी

7. डॉ. आकांक्षा सिंह

8. डॉ. सतीश शर्मा

#### जन्तु विज्ञान विभाग:

1. डॉ. निखिल कुमार

2. डॉ. नमिता कुमार

3. डॉ. संतोष कुमार त्रिपाठी

4. डॉ. शैलेन्द्र कुमार

5. डॉ. जितेन्द्र कुमार

6. कुमारी प्रज्ञा

7. डॉ. संगीता त्रिपाठी

8. डॉ. फणिन्द्र तिवारी

9. डॉ. शशांक श्रीवास्तव

10. डॉ. अरूण कुमार श्री.

#### इलेक्ट्रॉनिक्स:

1. डॉ. सुभाष शर्मा

2. डॉ. शिखा श्रीवास्तव

#### कम्प्यूटर एप्लिकेशन:

1. डॉ. रितेश कुमार श्री.

2. डॉ. रूपम श्रीवास्तव

3. श्रीमती एकता श्रीवास्तव

4. डॉ. गौतम सिन्हा

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

प्रोफेसर

प्रोफेसर

( विभाग प्रभारी )

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

प्रोफेसर

( विभाग प्रभारी )

प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

( विभाग प्रभारी )

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर

असिस्टेन्ट प्रोफेसर



**मनोविज्ञानः**

1. डॉ. सुष्मिता उपाध्याय  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर  
( विभाग प्रभारी )

2. डॉ. अजय बहादुर सिंह  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

**शारीरिक शिक्षा:**

1. डॉ. महेश यादव  
एसोसिएट प्रोफेसर  
( विभाग प्रभारी )

**पुस्तकालयः**

1. डॉ. सुशील कुमार सिंह  
पुस्तकालयाध्यक्ष

**वाणिज्य संकायः**

1. डॉ. सदफ अतहर  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर  
( विभाग प्रभारी )

2. डॉ. आयुष यादव  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

3. डॉ. नितिन कुमार बक्शी  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

4. डॉ. प्रियतोष मिश्रा  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

**गृह विज्ञानः**

1. डॉ. शक्ति सिंह  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर  
( विभाग प्रभारी )

2. डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव  
असिस्टेन्ट प्रोफेसर

**प्रशासनिक कार्यालयः**

1. डॉ. विवेक कुमार यादव  
अधीक्षक

2. श्रीमती रीता शुक्ला  
नैतिक लिपिक

3. श्री कमलेश लाल  
एकाउन्टेन्ट

4. श्री संजय श्रीवास्तव  
स्टेनो

5. श्रीमती विनीता श्रीवास्तव  
नैतिक लिपिक

6. श्रीमती ज्योतिबाला श्रीवास्तव  
नैतिक लिपिक

7. श्री सुरेश गुप्ता  
स्टेनो

8. श्री शशांक शेखर श्रीवास्तव  
सी.ई.ओ.

9. श्री संजीव रंजन दीक्षित  
नैतिक लिपिक

10. श्री राजकुमार शर्मा  
नैतिक लिपिक

**प्रयोगशाला सहायकः**

1. झिनकू प्रसाद  
लैब असिस्टेन्ट

2. श्रीमती शशिबाला श्रीवास्तव  
लैब असिस्टेन्ट

3. श्री अनिल नायक  
लैब असिस्टेन्ट

4. श्री अमृत लाल  
लैब असिस्टेन्ट

5. श्री महेश चन्द्र मौर्या  
लैब असिस्टेन्ट

6. श्री शिवम आनन्द  
लैब असिस्टेन्ट

7. श्री प्रमिल कुमार मिश्रा  
लैब असिस्टेन्ट

8. श्री धनन्जय कु0 श्रीवास्तव  
लैब असिस्टेन्ट

9. श्री रजत कुमार श्रीवास्तव  
लैब असिस्टेन्ट

10. श्री कुलदीप सहाय  
लैब असिस्टेन्ट

11. श्री अन्जनेय गुप्ता  
लैब असिस्टेन्ट

**चतुर्थ श्रेणी कर्मचारीः**

1. श्री आलिम

2. श्री कृष्ण कुमार

3. श्री ईश्वर चन्द यादव

4. श्रीमती केतकी देवी

5. श्री ओम प्रकाश

6. श्रीमती सुरेखा देवी

7. श्री संदीप पटेल

8. श्री दिलीप कुमार

9. श्री शैलेन्द्र कुमार

10. श्री मुकेश कुमार भारती

11. श्री त्रिलोकी यादव

12. श्री मकर ध्वज पाण्डेय

13. श्री मनोज कुमार

14. श्री धर्मवीर कुमार शर्मा

15. श्री चन्द्र प्रताप यादव

16. श्री अमर नाथ गौड़

17. श्री बृजराज

18. श्री सुनील कुमार गौड़

19. श्री रामाज्ञा

20. श्री मेहताब आलम

21. श्री गुड्डू श्रीवास्तव

22. श्री सुरेश प्रसाद

23. श्री अमर नाथ मिश्रा

24. श्री बृजेश मिश्रा

25. श्री राम धनी

26. श्री अब्दुल

27. श्री युसुफ

लैब असिस्टेन्ट

लैब असिस्टेन्ट

लैब असिस्टेन्ट

लैब असिस्टेन्ट

लैब असिस्टेन्ट

लैब असिस्टेन्ट

लैब असिस्टेन्ट

28. श्री राजेश यादव

29. श्री ओ.पी. मिश्रा

30. श्री विनय कुमार

31 श्री बजेश ( गार्ड )

# महाविद्यालय प्रबन्ध समिति

1. श्री गंगा दयाल श्रीवास्तव	अध्यक्ष
2. श्री मंकाेश्वर नाथ पाण्डेय	प्रबन्धक
3. श्री हरिनन्दन श्रीवास्तव	उपाध्यक्ष
4. श्री बलराम पाण्डेय	सदस्य
5. श्री एस.के. माथुर	सदस्य
6. श्री अजय कुमार श्रीवास्तव	सदस्य
7. श्री राजीत श्रीवास्तव	सदस्य
8. श्री पाण्डेय राजीव प्रसाद	सदस्य
9. डॉ. संजीव गुलाटी	सदस्य
10. प्रो. प्रत्यूष दूबे	सदस्य
11. श्री राकेश चन्द्र वर्मा	सदस्य
12. श्री राम कुमार	सदस्य
13. प्रो. सुशील तिवारी	सदस्य
14. श्री राकेश गोयल	सदस्य



# सत्र 2022-23 में राष्ट्रीय सेवा योजना की विभिन्न गतिविधियाँ



# वार्षिक क्रीड़ा प्रतियोगिता सत्र-2022-23

